Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 25 अंक 12 30 दिसम्बर, 2025 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

अज्ञेय महायोद्धा महाराजा सूरजमल सर्वश्रेष्ठ कुटनीतिज्ञ 18वीं सदी के गौरव-गिरी थे।

बलिदान दिवस पर विशेष (1707–1763)

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

महाराजा सूरजमल राजस्थान के भरतपुर के महान हिंदू राजा थे जो आज भी विश्व के सिरमौर अजेय के नाम से प्रशिद्ध है। उनका शासन जिन क्षेत्रों में था वे वर्तमान समय में भारत की राजधानी दिल्ली, उत्तर प्रदेश के आगरा, अलीगढ़, फिरोजाबाद, एटा, मेरठ, मुजफ्फरनगर जिले, राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर जिले और हरियाणा के गुरुग्राम, रोहतक, झज्जर, फरीदाबाद, रेवाड़ी, मेवात जिलों के अंतर्गत हैं। राजा सूरजमल में वीरता, धीरता, गंभीरता, उदारता, सतर्कता, दूरदर्शिता, सूझबूझ, चातुर्य और राजमर्मज्ञता का सुखद संगम सुशोभित था। मेल–मिलाप और सह–अस्तित्व तथा समवेशी सोच को आत्मसात करने वाली भारतीयता के वे सच्चे प्रतीक थे। राजा सूरजमल के समकालीन एक इतिहासकार ने उन्हें 'जाटों का प्लेटो' कहा है। इसी तरह एक आधुनिक इतिहासकार ने उनकी स्पष्ट दृष्टि और बुद्धिमता को देखते हुए उनकी तुलना ओडिसस से की है।

महाराजा सूरजमल विश्व के सिरमौर एशियाई प्लेटो, कूटनीतिश्र, सर्वश्रेष्ट रणनीतिज्ञ 18वीं सदी के गौरव–गिरी थे। लड़ाई के मैदान में मुंह में घोड़े की लगाम पकड़कर, दोनों हाथों से तलवारे चलाने की कला में माहिर थे और अपने समय के एक शक्तिशाली योद्धा थे। इन्होंने अपने जीवन में 80 युद्ध लड़े और कभी भी किसी युद्ध में नहीं हारे। उन्होंने मुगल मराठे अंग्रेज और राजपूत सभी को हराया। बागड़ूं के युद्ध में तो उन्होंने राजपूतों और मराठों को करारी शिख्सत दी थी। उनके बाल्यकाल से ही उनके शौर्य और बुद्धिमता के प्रमाण मिलते हैं। उन्हें बचपन से ही युद्ध कौशल और शासन प्रबंधन की शिक्षा दी गई थी। उनका शिक्षण ऐसे परिवेश में हुआ जहां उन्होंने राजनीतिक चातुर्य और सामरिक नीतियों को समझा। उन्हें संस्कृत, हिंदी और फारसी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान था, जो उस समय के शिक्षित शासकों की पहचान थी। उनकी शिक्षा ने उन्हें एक समर्थ और निपुण योद्धा बनने में मदद की।

महाराजा सूरजमल उत्तर मध्यकालीन भारतीय राजनीति के गौरव–गिरि थे। वे अपने समय के सर्वश्रेष्ट नीतिज्ञ और रमणिक कुशल योद्धा थे। उनका जन्म 13 फरवरी, 1707 को भरतपुर के सस्थापक राजा बदन सिंह के घर में हुआ था। उन्होंने बचपन से ही युद्धों में भाग लेना आरम्भ कर दिया था। उनका बचपन का नाम सुजान सिंह था लेकिन बाद में उसके प्रचण्ड प्रताप को देखकर ही राजपुरोहित ने इस तेजस्वी बाल रवि समान शिशु का नामकरण सूर्यमल्ल उपाख्य सूरजमल किया था।

भारत की शान भरतपुर के महाराजा सूरजमल का कद 7 फुट 2 इंच तथा 150 कि.ग्रा. भारी भरकम शरीर के स्वामी थे।

शेष पेज–2 पर

दीनबन्धु चौधरी छोटूराम जयंती समारोह 23 जनवरी 2026 को पंचकूला में मनाई जायेगी।

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला व चौधरी छोटू राम सेवा सदन कटरा द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 145वीं जयंती समारोह का आयोजन **23 जनवरी 2026 (शुक्रवार)** को चौ० छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला में किया जाएगा। हरियाणवी रागनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्षण होंगे। इस समारोह के मुख्य अतिथि माननीय चौधरी महीपाल ढ़ाड़ा, शिक्षा मन्त्री, हरियाणा होंगे। समारोह की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र कुमार चौधरी, उप–मुख्यमंत्री, जम्मू व कश्मीर करेंगे। श्री वरूण चौधरी, माननीय सांसद अम्बाला, चौधरी बिरेन्द्र सिंह, माननीय पूर्व केन्द्रीय मन्त्री, लेफ्टिनेंट जर्नल श्री डी.पी. वत्स, माननीय पूर्व सांसद, कैप्टन अभिमन्यु, पूर्व वित्तमंत्री, हरियाणा व श्रीमति बन्तो कटारिया, राज्य उपप्रधान, भाजपा समारोह में बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित होंगे। इस अवसर पर मेधावी छात्र, छात्राओं और खेलों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा। जाट सभा के आजीवन सदस्य जो की जनवरी 2025 से दिसंबर 2025 के बीच सेवानिवृत्त हुए हैं और जाट सभा के आजीवन सदस्य जो 80 वर्ष की आयु पूरी कर चुके है उन्हें भी सम्मानित किया जायेगा। वे अपना नाम, पता व विभाग का नाम दूरभाष नंबर जाट सभा चंडीगढ़ को 10 जनवरी 2026 तक सूचित करें। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी। आप इस स्मारिका में निबंध या कविता भेजना चाहते हो तो 10 जनवरी, 2026 तक भेजें। समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों से निवेदन है कि आप सह परिवार तथा अपने अन्य साथियों सहित समारोह में भाग लें।

जाट सभा की ओर से आप सभी को नये वर्ष 2026 की हार्दिक शुभ कामनाएं।

शेष पेज–1

महाराजा सूरजमल विश्व में अकेले ऐसे योद्धा थे जोकि दोनों हाथों से तलवार चलाने की कला के धनी थे। 20 अगस्त 1748 ई. में बागरू की लडाई में भारी बारिश के बीच शरीर पर 50 घाव होने के बावजूद अकेले ही 160 दुश्मनों को मौत के घाट उतार दिया था। एशिया के बहुत से देश इनसे मदद मांगने आते थे। इन्होंने अपने पूरे जीवन काल में 80 युद्ध लड़े और सभी में ये विजयी रहे। मुगल, मराठे, राजपूत व अंग्रेज ये सभी इनसे खौफ खाते थे। इन्हें कोई भी नहीं हरा पाया। इनके उत्तराधिकारी बेटे महाराजा जवाहर सिह ने दिल्ली जाकर मुगलों को बेरहमी से पीटा और दिल्ली को विजय करके मुगलों का सुरक्षा कवच कहे जाने वाले लालकिले के दरवाजे को उखाड़ कर भरतपुर में ला पटका जो अब भी भरतपुर के लोहागढ़ किले में रखा है।

महाराजा सूरजमल ने अपने शासनकाल के दौरान मुगल सामाज्य के साथ कई बार संघर्ष किया। उनके राज्य की सीमा मुगल सामाज्य से लगती थी, जिससे अक्सर संघर्ष की प्रस्थितियां बनी रहती थीं। सूरजमल ने मुगल सेनाओं के खिलाफ कई युद्धों में भाग लिया और अनेक बार विजय प्राप्त की। उनकी सबसे प्रमुख विजयों में से एक दिल्ली निकट आलमपुर की लड़ाई थी। उनके युद्ध कौशल और रणनीति ने मुगलों को कई बार परास्त किया। ये संघर्ष न केवल सूरजमल की सैन्य क्षमता को दर्शाते हैं, बल्कि उनकी राजनीतिक चतुराई को भी प्रकट करते हैं। उनके इन प्रयासों ने भरतपुर रियासत को मजबूती प्रदान की और उसे मुगल साम्राज्य के प्रभाव से मुक्त रखा।

महाराजा सूरजमल ने अपने शासन काल में मराठों की भी सहायता की थी। उन्होंने मराठा सेनाओं के साथ मिलकर मुगलों के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था। इस सहयोग ने भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया। सूरजमल की सेना ने मराठों के साथ मिलकर अनेक महत्वपूर्ण युद्धों में भाग लिया, जिसमें उनकी रणनीतिक क्षमता और युद्ध कौशल का परिचय मिलता है। उनका यह कदम न केवल उनके शत्रुओ के विरुद्ध एक साम्राज्य नीति थी, बल्कि यह भी दर्शाता है कि वे भारतीय साम्राज्य की रक्षा और स्थिरता के लिए कितने प्रतिबद्ध थे। महाराजा सूरजमल का यह कदम उनके दूरदर्शी नेतृत्व का परिचायक है। महाराजा सूरजमल ने 1761 ई. में मराठों और अहमदशाह अब्दाली के बीच में हुये युद्ध में मराठों को सलाह दी थी कि अपने बीबी बच्चों को मेरे अधीन किलो में सिफ्ट कर दों। लड़ाई आमने सामने ना होकर गौरिला पद्धति अपनाई जायें। सर्दी की बजायें गर्मी में युद्ध शुरू किया जायें और मेरे पास से कम से कम 10 हजार सैनिकों की सहायता ली जाये, लेकिन मराठों ने महाराजा सूरजमल की कोई बात नहीं मानी और जनवरी में ही युद्ध शुरू कर दिया। अपनी गलतियों की वजह से मराठें युद्ध हार गये। सेनापति भाऊ मारा गया और 20–22 हजार सैनिक भी मारे गये बाकी बचे भरतपुर भाग गये और जो बिमार और घायल थे उनकी महाराजा सूरजमल ने उपचार करवाया और सहायता की। उनको महाराष्ट्र छोड़ने का प्रबन्ध किया और अपने 2500 सैनिक उनके साथ मदद के लिये भेजे जो मराठा फौज ने वापिस नहीं आने दिये और महाराष्ट्र में नासिक जिले बसा लिये। आज भी नासिक जिले में जाटों के विभिन्न गोत्रों के 22 गांव है। जिनको "जाट बाईसा" कहा जाता है।

महाराजा सूरजमल ने अपने शासन काल में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शक्तियों के साथ भी संघर्ष किया। उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की बढ़ती हुई सता और प्रभाव का मुकाबला किया और अपनी स्वतंत्रता और संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े। सूरजमल की सेनाओं ने कई मौकों पर ब्रिटिश सेनाओं को चुनौती दी और उन्हें कई बार पराजित किया। इस संघर्ष ने भरतपुर रियासत की स्वतंत्रता और संप्रभुता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाराजा सूरजमल के इस पयास ने भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश प्रभाव के विस्तार को धीमा कर दिया और उन्हें एक कुशल योद्धा और साहसी नेता के रूप में स्थापित किया।

महाराजा सूरजमल केवल एक वीर योद्धा ही नहीं, बल्कि एक कुशल प्रशासक और जन कल्याणकारी शासक भी थे। उन्होंने अपनी रियासत में जन कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने कृषि, जल प्रबंधन और व्यापार के क्षेत्र में सुधार किए। सूरजमल ने कई नहरों का निर्माण करवाया, जिससे कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई। उनके शासनकाल में जनता के लिए सुविधाओं का विकास हुआ और शिक्षा को भी बढ़ावा दिया गया। महाराजा सूरजमल के ये प्रयास उनके जन–केंद्रित शासन का परिचायक है। उनके इन कार्यों ने उनकी प्रजा के जीवन स्तर को उन्नत बनाया और उन्हें एक समर्थ और लोकप्रिय शासक के रूप में स्थापित किया।

वे एक कुशल योद्धा और युद्धकला के मास्टर थे। उनके युद्ध कौशल में रणनीति, ताकत और चतुराई का संगम था। उन्होंने युद्ध के लिए विशेष तरीके और तकनीकों का विकास किया, जो उस समय के युद्ध कला में क्रांतिकारी थे। सूरजमल ने दुश्मन की ताकत और कमजोरियों का बारीकी से अध्ययन करके युद्ध की योजना बनाई। उनकी युद्ध रणनीति में आश्चर्यजनक हमले, घेराबंदी तकनीकें, गोरीला युद्ध प्रणाली और दुश्मन की रसद लाइनों को बाधित करना शामिल था। उन्होंने अपनी सेना को अत्याधुनिक हथियारों और रक्षा तकनीकों से लैस किया। महाराजा सूरजमल की युद्ध नीति में न केवल

शारीरिक शक्ति बल्कि मानसिक चातुर्य और रणनीतिक सोच भी शामिल थी। उनके युद्ध कौशल ने उन्हें अपने समय के महानतम योद्धाओं में से एक बना दिया था और उनकी विजयों ने उन्हें इतिहास में अमर बना दिया।

21 सितम्बर 1743 ईस्वीं में जयपुर के राजा सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके दोनों पुत्रों ईश्वरी सिंह और माधों सिंह में गृह युद्ध हो गया और यह गृह युद्ध कई साल तक चलता रहा। सिहांसन पर बड़े पुत्र का हक बनता था लेकिन छोटे बेटे माधव सिंह के मामा मेवाड़ी सम्राट जगत सिंह व कोटा, बुन्दी, जोधपुर, मराठे मलाहराव होल्कर, गंगाधर तांतियां व जयपुर की सेना मिलाकर सात राज्यों की सेना ने इक्कठे होकर माधव सिंह को राजगद्दी पर बैठा दिया। बड़े बेटे ईश्वरी सिंह ने अपने पिता के दोस्त मुंह बोले ताऊ भरतपुर सम्राट बदन सिंह से मदद की गुहार लगाई। अगस्त 1748 ईस्वीं में 15 हजार सैनिक देकर सूरजमल को ईश्वरी सिंह की सहायता के लिये भेजा। इस युद्ध में सभी सातों राज्यों की सैना को हरा कर ईश्वरी सिंह को गद्दी पर बैठानें वाले महाराजा सूरजमल ही थे। महाराजा सूरजमल ने मुसलाधार वर्षा के बीच एक दिन में 160 सैनिकों को मार गिराया था और सातों राज्यों की सवा लाख सेना को करारी शिकस्त दी थी।

महाराजा सूरजमल एक महान योद्धा और शासक थे, लेकिन उनके जीवन में कई बार ऐसे मौके आए जब उन्होंने गलतियाँ की। इन गलतियों में से कुछ युद्ध के मैदान में हुई, जबकि कुछ राजनीतिक निर्णयों में। एक बार, उन्होंने अपनी सेना को एक ऐसे युद्ध में झोंक दिया जिसके लिए वे पूरी तरह से तैयार नहीं थे, जिसका परिणाम उनके लिए हानिकारक साबित हुआ। इसके अलावा, कुछ मौकों पर उन्होंने अति आत्मविश्वास के कारण गलत रणनीतिक निर्णय लिए, जिससे उनकी सेना को नुकसान हुआ। राजनीतिक क्षेत्र में भी, कभी–कभी उन्होंने अपने सहयोगियों और शत्रुओं की योजनाओं का सही आँकलन नहीं किया, जिससे उन्हें राजनीतिक रूप से नुकसान उठाना पड़ा। इन गलतियों ने सूरजमल को यह सिखाया कि युद्ध और राजनीति दोनों ही क्षेत्रों में सावधानी और समग्र विचार–विमर्श आवश्यक हैं। उनकी इन गलतियों से यह सबक मिलता है कि किसी भी निर्णय में जल्दबाजी और अति आत्मविश्वास से बचना चाहिए।

25 दिसम्बर, 1763 को वह सुबह–सुबह दिल्ली के निकट हिंडन नदी के तट पर टहल रहे थे, उस समय वह निहत्थे घुम रहे थे तभी दुश्मनों ने अचानक एक साजिश के तहत उन पर आक्रमण कर दिया। जिसमें वे बहुत वीरता के साथ लड़े और अधिकतर दुश्मनों को मौत के घाट उतारते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। महाराजा सूरजमल की शहादत ने उन्हें भारतीय इतिहास में अमर वीर योद्धा के रूप में स्थापित किया। सूरजमल ने अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक अपनी रियासत और जनता के लिए लड़ाइ लड़ी। उनकी शहादत ने उनके समर्थकों और प्रजा में गहरा प्रभाव छोड़ा। उनकी शहादत के बाद भी उनकी वीरता के किस्से और उनके द्वारा किए गए कार्यों की कहानियां संस्कृति और इतिहास में जीवित रहे। उनके बलिदान ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना को प्रेरित किया। महाराजा सूरजमल की शहादत और उनकी वीरता की कहानियां आज भी भारतीय इतिहास और संस्कृति में उन्हें एक नायक के रूप में याद किया जाता हैं। उनका जीवन और बलिदान भारतीय इतिहास के एक गौरवशाली अध्याय के रूप में सम्मानित है।

महाराजा सूरजमल की कार्यशैली से हमें कई महत्वपूर्ण पाठ सीखने को मिलते हैं। उनके जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेकर हम अपने जीवन और करियर में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सबसे पहले, उनकी दूरदर्शिता और रणनीतिक सोच हमें बताती है कि किसी भी समस्या का समाधान ढूंढने के लिए गहराई से विचार करना और योजना बनाना जरूरी है। उनकी युद्ध कौशल और राजनीतिक चतुराई हमें सिखाती है कि संकट के समय में शांत और सजग रहना कितना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, सूरजमल का जन कल्याण के प्रति समर्पण हमें यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत लाभ से बढ़कर सामाजिक कल्याण होना चाहिए। उनके जीवन से यह भी सिखने को मिलता है कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य और साहस के साथ काम लेना चाहिए। अंत में, महाराजा सूरजमल की गलतियों से हमें यह पाठ मिलता है कि हर गलती एक सीख है और इससे उबरकर आगे बढ़ना चाहिए। उनका जीवन हमें नेतृत्व, साहस, और विश्वास की महता का पाठ पढ़ाता है।

महाराजा सूरजमल का जीवन और उनकी उपलब्धियाँ भारतीय इतिहास के एक सुनहरे अध्याय का हिस्सा है। उनकी वीरता, बुद्धिमता, और जन कल्याण के प्रति समर्पण आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। उनके युद्ध कौशल, राजनीतिक चतुराई, और उनकी शहादत ने उन्हें एक अमर नायक के रूप में स्थापित किया है। महाराजा सूरजमल का जीवन हमें शक्ति, साहस और आत्म–सम्मान का पाठ पढ़ाता है, जो हर युग में मानवता के लिए प्रेरणादायक है।

ऐसे कीर्तिमान महापुरूष महायोद्धा को लेखक शतः शतः नमन करता है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

विचार और जल हमेशा स्वच्छ होना चाहिए, दूषित जल स्वास्थ्य बिगाड़ देता है और दुषित विचार जीवन को।

राजा महेन्द्र प्रताप एक स्वतन्त्रता सेनानी, क्रांतिकारी-पत्रकार वह एक महान देशभक्त दानवीर भी थे।

– जयपाल सिंह पुनियां, एम.ए. इतिहास,
एच.एफ.एस (सेवानिवृत) (मो० 9466110050)

राजा महेन्द्र प्रताप भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पत्रकार, लेखक, क्रांतिकारी, समाज सुधारक और महान दानवीर थे। वे 'आर्यन पेशवा' के नाम से प्रसिद्ध थे और भारत की अंतरिम सरकार के अध्यक्ष थे। यह सरकार प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान बनी थी और भारत के बाहर से संचालित हुई थी। उन्होने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1940 में जापान में 'भारतीय कार्यकारी बोर्ड' (Executive Board of India) की स्थापना की थी। अपने कॉलेज के साथियों के साथ मिलकर उन्होंने सन 1911 में बाल्कन युद्ध में भी भाग लिया। उनकी सेवाओं को याद करते हुए भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया है।

महेन्द्र प्रताप का जन्म 1 दिसम्बर 1886 को एक जाट परिवार में हुआ था जो मुरसान रियासत के शासक थे। यह रियासत वर्तमान उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में थी। वे राजा घनश्याम सिंह के तृतीय पुत्र थे। जब वे 3 वर्ष के थे तब हाथरस के राजा हरनारायण सिंह ने उन्हें पुत्र के रूप में गोद ले लिया। 1902 में उनका विवाह धूम–धाम के साथ बलवीर कौर से हुआ था जो जीन्द रियासत के राजा की लड़की थीं। विवाह के समय वे कॉलेज की शिक्षा ले रहे थे।

हाथरस के कायस्थ राजा दयाराम ने 1817 में अंग्रेजों से भीषण युद्ध किया। मुरसान के जाट राजा ने भी युद्ध में जमकर साथ दिया। अंग्रेजों ने दयाराम को बंदी बना लिया। 1841 में दयाराम का देहान्त हो गया। उनके पुत्र गोविन्दसिंह गद्दी पर बैठे। उनके कोई सन्तान नही थी। राजा गोविन्दसिंह की 1861 में मृत्यु हो गई। संतान न होने पर वे अपनी पत्नी को पुत्र गोद लेने का अधिकार दे गय थे। अतः रानी साहबकुँवरी ने जटोई के राजा रूपसिंह के पुत्र हरनारायण सिंह को गोद ले लिया। अपने दत्तक पुत्र के साथ रानी अपने महल वृन्दावन में रहने लगी। राजा हरनारायन को कोई पुत्र नहीं था। अतः उन्होंने मुरसान के राजा घनश्यामसिंह के तीसरे पुत्र महेन्द्र प्रताप को गोद ले लिया। इस प्रकार महेन्द्र प्रताप मुरसान राज्य को छोड़कर हाथरस राज्य के राजा बने। हाथरस राज्य का वृन्दावन में विशाल महल है उसमें ही महेन्द्र प्रताप का शैशव काल बीता। बड़ी सुख सुविधाएँ मिली। महेन्द्र प्रताप ने अलीगढ़ में सैयद खाँ द्वारा स्थापित स्कूल में बी. ए. तक शिक्षा ली।

उनके 1909 में पुत्री हुई–भक्ति, 1913 में पुत्र हुआ–प्रेम। देश–विदेश की खूब यात्राएँ कीं। 1906 में जीन्द के महाराजा की इच्छा के विरुद्ध राजा महेन्द्र प्रताप ने कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया और वहाँ से स्वदेशी के रंग में रंगकर लौटे।

1909 में वृन्दावन में प्रेम महाविद्यालय की स्थापना की जो तकनीकी शिक्षा के लिए भारत में प्रथम केन्द्र था। मदनमोहन मालवीय इसके उद्घाटन समारोह में उपस्थित रहे। राजा महेन्द्र प्रताप ने ट्रस्ट बनवाये और अपने पांच गाँव, वृन्दावन का राजमहल और चल संपत्ति का दान दे दिया। इसीलिए वह महान देशभक्त दानवीर बन गए।

उनकी दृष्टि विशाल थी। वे जाति, वर्ग, रंग, देश आदि के द्वारा मानवता को विभक्त करना घोर अन्याय, पाप और अत्याचार मानते थे। ब्राह्मण–भंगी को भेद बुद्धि से देखने के पक्ष में नहीं थे। वृन्दावन में ही एक विशाल फलवाले उद्यान को जो 80 एकड़ में था, 1911 में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को दान में दे दिया। जिसमें आर्य समाज गुरुकुल है और राष्ट्रीय विश्वविद्यालय भी है।

प्रथम विश्वयुद्ध से लाभ उठाकर भारत को आजादी दिलवाने के पक्के इरादे से वे विदेश गये। इसके पहले 'निर्बल सेवक'एक समाचार–पत्र देहरादून से राजा साहेब निकालते थे। उसमें जर्मन के पक्ष में लिखे लेख के कारण उन पर 500 रुपये का दण्ड किया गया जिसे उन्होंने भर तो दिया लेकिन देश को आजाद कराने की उनकी इच्छा प्रबलतम हो गई। विदेश जाने के लिए पासपोर्ट नहीं मिला। मैसर्स थौमस कुक एण्ड सन्ज के मालिक बिना पासपोर्ट के अपनी कम्पनी के पी. एण्ड ओ स्टीमर द्वारा राजा महेन्द्र प्रताप और स्वामी श्रद्धानंद के ज्येष्ठ पुत्र हरिश्चंद्र को इंगलैण्ड ले गया। उसके बाद जर्मनी के शासक कैसर से भेंट की। उन्हें आजादी में हर संभव सहायता देने का वचन दिया। वहाँ से वह अफगानिस्तान गये। बुडापेस्ट, बुल्गारिया, टर्की होकर हैरत पहुँचे। अफगान के बादशाह से मुलाकात की और वहीं से 1 दिसम्बर 1915 में काबुल से भारत के लिए अस्थाई सरकार की घोषणा की जिसके राष्ट्रपति स्वयं तथा प्रधानमंत्री मौलाना बरकतुल्ला खाँ बने। स्वर्ण–पट्टी पर लिखा सूचनापत्र रूस भेजा गया। अफगानिस्तान ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया तभी वे रूस गये और लेनिन से मिले। परंतु लेनिन ने कोई सहायता नहीं की। 1920 से 1946 तक विदेशों

में भ्रमण करते रहे। विश्व मैत्री संघ की स्थापना की। 1946 में भारत लौटे। सरदार पटेल की बेटी मणिबेन उनको लेने कलकत्ता हवाई अड्डे गईं। वे संसद–सदस्य भी रहे।

ब्रिटिश विरोधी ताकतों में इनके आंदोलन का समर्थन किया। ये भारत में विदेशी शासन के लिए एक ब्रिटिश सरकार ने इनके सिर पर इनाम घोषित कर दिया, इनकी पूरी संपत्ति कुर्क कर ली और इन्हें भगोड़ा घोषित कर दिया। एक बड़ा खतरा बन गए थे। 1925 में ये जापान गए। इन्होंने 1929 में 'वर्ल्ड फेडरेशन मासिक पत्रिका' प्रकाशित की। राजा महेंद्र प्रताप ने भारत को मुक्त करने के लिए विश्व युद्ध की स्थितियों का उपयोग करने की पूरी कोशिश की। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वह जापान के टोक्यों में रहे और भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करने के लिए वर्ल्ड फेडरेशन सेंटर से अपना आंदोलन जारी रखा। उन्होंने 1940 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान में भारत के कार्यकारी बोर्ड का गठन किया। अंत में ब्रिटिश सरकार को राजा महेंद्र प्रताप के सामने घुटने टेकने पड़े और उन्हें सम्मान के साथ टोक्यों से भारत आने की अनुमति मिल गई।।

भारतीय इतिहास में राजा महेंद्र प्रताप के योगदान का इतिहासकारों द्वारा ठीक से मूल्यांकन नहीं किया गया है।

राजा महेंद्र प्रताप को 1932 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था। लेकिन उस साल पुरस्कार की घोषणा नहीं की गई थी और इस पुरस्कार राशि को पुरस्कार खंड के एक विशेष खजाने में बांट दिया गया था।

सन् 1957 में राजा महेन्द्र प्रताप ने लोकसभा चुनाव में मथुरा लोकसभा की सीट से निर्दलीय सांसद का चुनाव लड़ा था जिसमें इन्होंने प्रचंड जीत हासिल की थी और इस चुनाव में इन्होंने भारतीय जन संघ पार्टी के उम्मीदवार (भारत के भावी प्रधानमंत्री) अटल बिहारी वाजपेयी की जमानत तक जब्त करा दी थी।

भारतीय डाक और दुरसंचार विभाग ने 15 अगस्त 1979 को स्वतंत्रता की वर्षगांठ पर 30 पैसे मूल्यवर्ग का स्मारक डाक टिकट जारी कर भारत माता के एक कांतिकारी सपूत की स्मृति को नमन किया था।

29 अप्रैल 1979 में 93 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया। मार्च 2021 में उत्तर प्रदेश सरकार ने उनके नाम पर अलीगढ़ में एक विश्वविद्यालय स्थापित करने की घोषणा की है।

हमारी सभी की प्रार्थना है कि उनको वर्तमान सरकार शांति के लिए नोबल पुरस्कार से नवाजने की कृपा करें। यही उनको सच्ची श्रद्धाजंली है।

भारत रत्न चौधरी चरण सिंह

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

चौधरी चरण सिंह भारत के पांचवें प्रधानमंत्री थे। उन्होंने यह पद 28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980 तक सम्भाला। चौधरी चरण सिंह ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीयता और ग्रामीण परिवेश की मर्यादा में लिया। चरण सिंह किसानों की आवाज बुलन्द करने वाले प्रखर नेता माने जाते थे।

यह समाजवादी पार्टी तथा कांग्रेस (ओ) के सहयोग से देश के प्रधानमंत्री बने। इन्हें काँग्रेस (आई) और सी. पी. आई. ने बाहर से समर्थन दिया, लेकिन वे इनकी सरकार में सम्मिलित नहीं हुए। इसके अतिरिक्त चौधरी चरण सिंह भारत के गश्हमंत्री (कार्यकाल 24 मार्च 1977– 1 जुलाई 1978), उप–प्रधानमंत्री (कार्यकाल 24 मार्च 1977– 28 जुलाई 1979) और दो बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे।

<u>प्रारंभिक जीवन:</u>

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसम्बर, 1902 को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के नूरपुर ग्राम में एक मध्यम वर्गीय कृषक परिवार में हुआ था। इनका परिवार जाट पृष्ठभूमि वाला था। इनके पुरखे महाराजा नाहर सिंह ने 1857 की प्रथम क्रान्ति में विशेष योगदान दिया था। महाराजा नाहर सिंह बल्लभगढ़ के निवासी थे, जो कि वर्तमान में हरियाणा में आता है। राजा नाहर सिंह को दिल्ली के चाँदनी चौक में ब्रिटिश हुकूमत ने फाँसी पर चढ़ा दिया था।

तब अंग्रेजों के खिलाफ क्रान्ति की ज्वाला को अक्षुण बनाए रखने के लिए राजा नाहर सिह के समर्थक और चौधरी चरण सिंह के दादा जी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के पूर्ववर्ती क्षेत्र में बस गए। चौधरी चरण सिंह को परिवार में शैक्षणिक वातावरण प्राप्त हुआ था। स्वयं इनका भी शिक्षा के

प्रति अतिरिक्त रुझान रहा। चौधरी चरण सिंह के पिता चौधरी मीर सिंह चाहते थे कि उनका पुत्र शिक्षित होकर देश सेवा का कार्य करे।

उनकी प्राथमिक शिक्षा नूरपुर में ही हुई और उसके बाद मैट्रिकुलेशन के लिए उनका दाखिला मेरठ के सरकारी हाई स्कूल में करा दिया गया। सन 1923 में चौ० चरण सिंह ने विज्ञान विषय में स्नातक किया और दो वर्ष बाद सन 1925 में उन्होंने ने कला वर्ग में स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई की और फिर विधि की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सन 1928 में गाजियाबाद में वकालत आरम्भ कर दी। वकालत के दौरान वे अपनी ईमानदारी, साफगोई और कर्तव्यनिष्ठा के लिए जाने जाते थे। चौधरी चरण सिंह उन्हीं मुकदमों को स्वीकार करते थे जिनमें मुवक्किल का पक्ष उन्हें न्यायपूर्ण प्रतीत होता था।

कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (1929) के बाद उन्होंने गाजियाबाद में काग्रेस कमेटी का गठन किया और सन 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान नमक कानून तोड़ने पर चरण सिंह को 6 महीने की सजा सुनाई गई। जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने स्वयं को देश के स्वतन्त्रता संग्राम में पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। सन 1937 में मात्र 34 साल की उम्र में वे छपरौली (बागपत) से विधान सभा के लिए चुने गए और कृषकों के अधिकार की रक्षा के लिए विधानसभा में एक बिल पेश किया। यह बिल किसानों द्वारा पैदा की गयी फसलों के विपणन से सम्बंधित था। इसके बाद इस बिल को भारत के तमाम राज्यों ने अपनाया।

चौ० चरण सिंह का जन्म एक जाट परिवार में हुआ था। स्वाधीनता के समय उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। स्वतन्त्रता के पश्चात् वह राम मनोहर लोहिया के ग्रामीण सुधार आन्दोलन में लग गए। बाबूगढ़ छावनी के निकट नूरपुर गांव, तहसील हापुड़, जनपद गाजियाबाद, कमिश्नरी मेरठ में काली मिट्टी के अनगढ़ और फूस के छप्पर वाली झोपड़ी में 23 दिसम्बर, 1902 को आपका जन्म हुआ। चौधरी चरण सिंह के पिता चौधरी मीर सिंह ने अपने नैतिक मूल्यों को विरासत में चरण सिंह को सौंपा था। चरण सिंह के जन्म के 6 वर्ष बाद चौधरी नीर सिंह सपरिवार नूरपुर से जानी खुर्द गांव आकर बस गये थे।

1930 में गांधीजी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन में नमक कानून तोड़ने का आव्हान किया, चरण सिंह ने गाजियाबाद की सीमा पर बहने वाली हिंडन नदी पर नमक बनाया था एवं 'डांडी मार्च' में भी भाग लिया। इस दौरान इन्हें 6 माह के लिए जेल भी जाना पड़ा। इसके बाद इन्होंने महात्मा गाँधी जी की छत्रछाया में खुद को स्वतन्त्रता की आँधी का

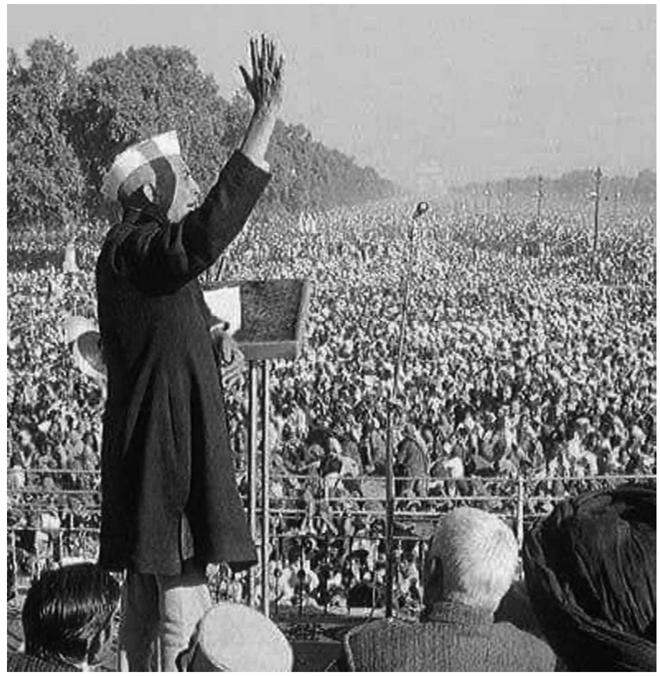

हिस्सा बनाया 1940 के सत्याग्रह आन्दोलन में भी यह जेल गए उसके बाद 1941 में बाहर आये फरवरी 1937 में इन्हें विधानसभा के लिए चुना गया।

31 मार्च 1938 में इन्होने 'कृषि उत्पाद बाजार विधेयक' पेश किया यह विधेयक किसानों के हित में था, यह विधेयक सर्वप्रथम 1940 में पंजाब द्वारा अपनाया गया। आजादी के बाद, चौधरी चरण सिंह 1952 में उत्तरप्रदेश विधानसभा के लिए चुने गये। 31 माई 1938 में इन्होंने कृषि उत्पाद बाजार किसानों के हित में था, यह विधेयक सर्वप्रथम 1940 में पास करवाया। आपने 1939 में ही किसान को एक आरक्षण दिलाने का लेख लिखा था।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि किसानों के बेदखली के अभिशाप से मुक्ति दिलाने हेतु भूमि उपयोग बिल कामदार का और 1956 में जमींदारी उन्मूलन अधिनियम पास करवाकर एक प्रशंसनीय कार्य किया था जो आपकी एक अनूठी मिशाल है। जो आज तक कोई किसान नेता नहीं कर पाया और आगे उम्मीद नहीं के बराबर है। आपने किसानों के साथ–साथ छात्र समाज को बनासाठी गोली के मिटाया सरकारी अधिकारियों से रिश्वतखोरी मिटाने, प्रशासन में कुशलता लाने और देश की गरीबी बेकारी हटाने के लिए अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया था।

सन् 1969 में उत्तर प्रदेश में विधानसभा के मध्यावधि चुनावों में 198 सीटों पर विजय प्राप्त करके 1970 में पुनः उत्तर प्रदेश के मुखामंत्री पद की शपथ ली और 1974 में लोकदल का गठन किया। 1975 में 29 अगस्त को इमरजेंसी के दौरान आपको गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। 1970 में जनता

मन मुताबिक ना मिलने पर निराश मत होना क्योंकि लेने वाला और देने वाला एक ही है।

पार्टी के गठन में मुख्य भूमिका निभाकर लोकसभा के लिए प्रथम बार निर्वाचित हुए और जनता पार्टी सरकार में आप गृहमंत्री बने। 30 जून 1978 को प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के साथ मतभेद होने के कारण मंत्री मण्डल से त्याग पत्र दे दिया। जब वह देहरादून में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने आम जनता से कहा था कि हमारी पार्टी ने सभी उम्मीदवारों को देख परखकर चुना है। अगर जनता में से किसी को ऐसा लगता है कि उनका कोई उम्मीदवार हाथ और लंगोट का कच्चा है तो उसे कभी दोबारा नहीं चुनना। ऐसा कभी किसी प्रधानमंत्री ने अपने उम्मीदवारों के लिए आज तक नहीं कहा। बड़ौत में सभा को संबोधित करने के बाद उनके पास शिक्षकों का एक दल पहुंचा। उन्होंने अपने–अपने ग्रेड के हिसाब से सैलरी बढ़ाने की बात कही। तब चौधरी जी ने पूछा कि आप कितने घंटे स्कूल में पढ़ाते हैं।

शिक्षकों का जवाब था कि 6 घंटे। तब उन्होंने शिक्षकों से कहा था देश का जवान आपसे कम सैलरी पर 24 घंटे ड्यूटी करता है। इसलिए 24 घंटे के हिसाब से आपकी सैलरी में कटौती कर देता हूं। उसके बाद सभी शिक्षक माफी मांगते हुए वहां से लौट आए थे। भारत में, चौधरी चरण सिंह का जन्मदिन 'राष्ट्रीय किसान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक वर्ष 23 दिसम्बर को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और किसान नेता चौधरी चरण सिंह के जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रीय किसान दिवस मनाया जाता है।

विचारः

- असली भारत गांवों में रहता है।
- अगर देश को उठाना है तो पुरुषार्थ करना होगा हम सब को पुरुषार्थ करना होगा में भी अपने आपको उसमें शामिल करता हूँ, मेरे सहयोगी मिनिस्टरों को, सबको शामिल करता हूँ हमको अनवरत् परिश्रम करना पड़ेगा तब जाके देश की तरक्की होगी।
- राष्ट्र तभी संपन्न हो सकता है जब उसके ग्रामीण क्षेत्र का उन्नयन किया गया हो तथा ग्रामीण क्षेत्र की कृषि आय अधिक हो।
- किसानों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होगी तब तक देश की प्रगति संभव नहीं है,
- किसानों की दशा सुधरेगी तो देश सुधरेगा।
- किसानों की क्रय शक्ति नहीं बढ़ती तब तक औधोगिक उत्पादों की खपत भी संभव नहीं है.
- भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं है जिस देश के लोग भ्रष्ट होंगे वो देश कभी, चाहे कोई भी लीडर आ जाये, चाहे कितना ही अच्छा प्रोग्राम चलाओ वो देश तरक्की नहीं कर सकता।
- हरिजन लोग, आदिवासी लोग, भूमिहीन लोग, बेरोजगार लोग या जिनके पास कम रोजगार है और अपने देश के 50 प्रतिशत किसान जिनके पास केवल 1 हेक्टेयर से कम जमीन है इन सबकी तरफ सरकार का विशेष ध्यान होगा।
- सभी पिछड़ी जातियों अनुसूचित जातियों, कमजोर वर्गों, अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जनजातियों को अपने अधिकतम विकास के लिये पूरी सुरक्षा एवं सहायता सुनिश्चित की जाएगी
- किसान इस देश का मालिक है, परन्तु वह अपनी ताकत को भूल बैठा है
- देश की समशद्धि का रास्ता गांवों के खेतों एवं खलिहानों से होकर गुजरता है।

चौधरी चरण सिंह से जुड़ी कुछ रोचक जानकारियाँ

- क्या चौधरी चरण सिंह धूम्रपान करते थे ? नहीं
- क्या चौधरी चरण सिंह शराब पीते थे ? नहीं
- चरण सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के एक जाट परिवार में हुआ था।
- चरण सिंह के जन्म के 6 वर्ष बाद उनके पिता सपरिवार नूरपुर के जानी खुर्द के निकट भूपगढ़ी में जाकर बस गए।
- कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित होने के पश्चात् युवा चौधरी चरण सिंह ने राजनीति में जाने का निश्चय किया।
- वर्ष 1929 में, वह भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में शामिल हुए और गाजियाबाद में कांग्रेस पार्टी का गठन किया।
- वर्ष 1930 में, उन्होंने महात्मा गांधी के द्वारा चलाए गए 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' में प्रतिभाग लेते हुए, नमक कानून तोड़ने का निर्णय किया।
- वर्ष 1940 में, सत्याग्रह के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और अक्टूबर 1941 को रिहा कर दिया गया।
- चौधरी चरण सिंह ने नेहरु की सोवियत पद्धति पर आधारित आर्थिक सुधारों का विरोध किया, क्योंकि उनका मानना था कि सहकारी पद्धति से की गई, खेती भारत में सफल नहीं हो सकती।
- 9 अगस्त 1942 को, उन्होंने 'भारत छोड़ो' व अगस्त क्रांति के दौरान गाजियाबाद, हापुड़, मेरठ, मवाना, सरधना, बुलन्द शहर के गाँवों में गुप्त रूप से क्रांतिकारीयों के संगठन को तैयार करना शुरू किया।

चौधरी चरण सिंह का निधन 1987 में हुआ दिल्ली में यमुना के किनारे उनकी समाधि है जिसे किसान घाट के तौर पर जाना जाता है। उनके निधन के बाद लोकदल का नया अध्यक्ष

उनके बेटे अजित सिह को बनाया गया, इसी लोकदल के सहारे उनके पोते आज राजनीति के मैदान में है। देश में अनेक सरकारी संस्थान चौधरी चरण सिंह के नाम से हैं। लखनऊ का अमौसी एयरपोर्ट को भी चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट कहा जाता है। इसके अलावा चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार भी इनके नाम से जाना जाता है।

चौधरी चरण सिंह ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीयता और ग्रामीण परिवेश की मर्यादा में जिया। वो किसानों के निर्विवाद सर्वमान्य नेता माने जाते रहे हैं। उन्होंने लेखापाल के पद का सश्जन भी किया। वो 3 अप्रैल 1967 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। 17 अप्रैल 1968 को उन्होंने मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। मध्यावधि चुनाव में उन्होंने अच्छी सफलता मिली और दुबारा 17 फरवरी 1970 को वे मुख्यमंत्री बने। उसके बाद वो केन्द्र सरकार में गश्हमंत्री बने तो उन्होंने मंडल और अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की। उनके द्वारा तैयार किया गया जमींदारी उन्मूलन विधेयक राज्य के कल्याणकारी सिद्धांत पर आधारित था। एक जुलाई 1952 को यूपी में उनकी बदौलत जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ और गरीबों को अधिकार मिला। किसानों के हित में उन्होंने 1954 में उत्तर प्रदेश भूमि संरक्षण कानून को पारित कराया। 1979 में वित्त मंत्री और उपप्रधानमंत्री के रूप में राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की स्थापना की। वे पूंजी आधारित बड़े उद्योगों की अपेक्षा श्रम आधारित लघु और कुटीर उद्योगों को महत्व देते थे। इस बात का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि जिस दिन उन्होंने प्रधानमन्त्री पद की शपथ ली, भारत के स्टाक एक्सचेंज बंद हो गए थे।

उन्होंने अर्थशास्त्र से संबधित निम्नलिखित पुस्तकें लिखी थी जिनमें से कुछ विभिन्न विश्वविद्यालयों के अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में शामिल हैं।

1. Joint Farming X-rayed (1959)
2. India's Economic Policy – The Gandhian Blueprint (1978)
3. Economic Nightmare of India: Its Cause and Cure (1981)
4. Abolition of ZamindariCo-operative Farming X-rayed
5. Peasant Proprietorship or Land to the Workers
6. Prevention of Division of Holdings Below a Certain

किसान और मजदूर वर्ग के इस सच्चे हितैषी, भारत मां के सपूत को इनकी जयंती पर विनम्र श्रद्धांजलि।

गुरु नानक घर की शिक्षा से प्रेरित धरती- हरियाणा

कुशाल सिंह दहियाः हरियाणा का वीर शहीद और बढ़-खालसा का प्रतीक

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

हरियाणा के सोनीपत का नाम वीरता और बलिदान की अदम्य शौर्य मिसाल का प्रतीक दादा कुशाल सिंह दहिया, जिनका जीवन और बलिदान आज भी खालसा पंथ और खालसा आंदोलन के इतिहास में अमूल्य होने के साथ सम्मानित याद के साथ यह आधुनिक समाज के लिए भी प्रेरणादायक संदेश है।

जीवन परिचय

कुशाल सिंह दहिया का जीवंत उदाहरण है कि सच्चा वीर वही है जो अपने जीवन की सर्वोच्च आहुति देकर धर्म, न्याय और समाज के हित में योगदान करता है। कुशाल सिंह दहिया का जन्म गढी दहिया (आज के समय सोनीपत जिले के गांव बढ़–खालसा) के एक जाट परिवार में हुआ था। दहिया एक प्रमुख जाट गोत्र है जो विशेष रूप से हरियाणा, उत्तर प्रदेश, और राजस्थान के क्षेत्रों में पाया जाता है। इस गोत्र के लोग ऐतिहासिक रूप से खेतिहर, योद्धा, और समाज के विभिन्न कार्यों में शामिल रहे हैं। अगर खुशाल सिंह दहिया इस समुदाय से थे, बचपन से ही उनमें साहस और जनहीत की भावना से परिपूर्ण उन्होंने शिक्षा और परिवारिक मूल्यों के साथ–साथ अपने समाज और धर्म की रक्षा का संकल्प लिया। उनके जीवन से शिक्षा मिलती है कि वीरता केवल शौर्य और युद्ध तक सीमित नहीं होती, बल्कि दूसरों की रक्षा, त्याग की तत्परता और न्याय की स्थापना में भी निहित होती है।

वीरता और बलिदान

कुशाल सिंह दहिया ने राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों में धर्म और न्याय की रक्षा के लिए अद्वितीय साहस का परिचय दिया। उन्होंने गुरु तेग बहादुर जी कि वाणी की राह में अग्रसर और खालसा पंथ की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। है गुरु नानक के घर की शिक्षा से प्रेरित व गुरु तेग बहादुर जी कि वाणी की राह में अग्रसर उन्होंने दिखा दिया कि सच्चा मनुष्य वही है जो अपने जीवन की सर्वोच्च आहुति देकर स्वतंत्रत धार्मिक निष्ठा और न्याय की रक्षा करता है। उनका बलिदान केवल व्यक्तिगत वीरता नहीं,

बल्कि यह समाज और गुरु के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक था। उनका आत्मबलिदान समाज को ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।

जबरदस्ती इस्लाम कबूल न करने पर जालिम औरंगजेब ने भाई सतीदास, भाई मतीदास और भाई दयाला को शहीद कर दिया। गुरु जी की शहादत के बाद, मुगल शासन ने उनके शीश के अंतिम संस्कार तक की अनुमति नहीं दी। औरंगजेब ने उनके पवित्र पार्थिव शरीर की बेअदबी करने के मकसद से शरीर के चार टुकड़े कर के उसे दिल्ली के चारों बाहरी गेटों पर लटकाने का आदेश दिया।

उस समय आई आँधड़ का मौके पाकर स्थानीय व्यापारी लक्खीशाह गुरु जी का धड और भाई जैता जी गुरु जी का शीश उठाकर ले जाने में कामयाब हो गए।भाई जैता जी ने अपनी जान जोखम में डालकर गुरु जी का शीश दिल्ली से निकाल कर आनंदपुर ले जाने का निर्णय ले गुरूजी का शीश उठा उसे कपडे में लपेटकर अपने कुछ साथियों के साथ आनंदपुर की ओर चल पड़े, व लक्खीशाह ने गुरु जी के धड़ को अपने घर में रखकर अपने घर को आग लगा समझदारी व त्याग की परिभाषा पारित लिखी।

औरँगजेब ने सेना को आदेश दिया कि किसी भी तरह से गुरु जी का शीश वापस दिल्ली लाओ। भाई जैता जी बचते बचाते सोनीपत के पास गढ़ीदहिया जो बाद में बढ़–खालसा के नाम से भी जाना जाता है (बढ़खालसा) गाँव में पहुंचे, मुगल सेना उनके पीछे लगी हुई थी। वहां के स्थानीय निवासियों को जब यह बात पता चली कि – गुरु जी ने शहादत दी है व उनका शीश लेकर उनके शिष्य उनकी गढ़ी में पहुचे हैं तभी गढ़ी वालों ने शीश के सादर नमन दर्शन कर उनका स्वागत किया, दादा कुशाल सिंह दहिया ने भी वहां पहुंच, गुरु जी के शीश के सादर नमन दर्शन किये। गढी में लोग एकत्रित हो मुगल सशस्त्र सैनिको का दल देखते हुए गढी वालों द्वारा उनका मुकाबला आसान नहीं व मुगल सैनिक गुरु जी के शीश को आनन्दपुर साहिब तक नहीं पहुंचने देंगे, वे उपाय सुझने लगे कि अब क्या किया जाए ? ऐसे में क्या हल किया जाए ? तब खुशाल सिंह दहिया नामक वीर ने स्वयं अपना सिर बलिदान कर दिया–ताकी मुगल सैनिकों भ्रमित हो जाएँ और गुरु जी का शीश सुरक्षित पहुँच जाए। यह घटना केवल धार्मिक निष्ठा की ही नहीं साथ में यह मानवता की साझी विरासत थी।

दादा कुशाल सिंह दहिया ने आगे बढ़कर कहा कि – सैनिको से बचने का केवल एक ही रास्ता है कि – गुरुजी का शीश मुगल सैनिको को सौंप दिया जाए. उनकी इस बात पर सभी गढी वाले दादा को क्रोधित दृष्टि से देखने लगे, लेकिन दादा ने आगे कहा – आप लोग ध्यान से देखिये गुरु जी का शीश, मेंरे चेहरे से कितना मिलता जुलता है आप लोग अगर मेरा शीश काट कर, उसे गुरु तेगबहादुर जी का शीश कहकर, मुगल सैनिको को सौंप देंगे तो ये मुगल सैनिक शीश को लेकर वापस लौट जायेंगे और गुरु जी का शीश बड़े सम्मान के साथ आनंदपुर पहुँच कर उनका सम्मान के साथ अंतिम संस्कार हो जाएगा। उनकी इस बात से चारों तरफ सन्नाटा फैल गया परंतु कोई भी उनका शीश काटने के लिए तैयार नहीं हुआ।सब लोग स्तब्ध रह गए कि– कैसे कोई अपना शीश काटकर दे सकता है ? पर वीर कुशाल सिंह फैसला ले चुके थे, उन्होंने सबको समझाया कि– गुरु तेग बहादुर जी कों हिन्द की चादर कहा जाता हैं, उनके सम्मान को बचाना हिन्द का सम्मान बचाना है, इसके अलावा कोई हल नहीं है। दादा कुशाल सिंह जी एक ऐसा वीर जिसने अपने ही पुत्र के हाथों से अपना शीश कटवाकर थाली में रख कर गुरु शिष्यों को दे दिया जाए ये आदेश भरी पंचायत में अपने पुत्र को दिया, बिना हिचक व डर के उस आदेश का पालन करे। एक पुत्र धर्म रक्षा के लिए अपने पिता का शीश काटे, ऐसी मिसाल देखने तो क्या सुनने को भी नहीं मिलती।

जब मुगल सैनिक गाँव में पहुंचे तो सिक्ख दोनों शीश लेकर वहां से निकले, भाई जैता जी गुरु जी का शीश लेकर तीव्र गति से निकले और जिनके पास दादा कुशाल सिंह दहिया जी का शीश था, वे जानबूझकर योजना अनुसार धीमी गति से चले, मुगल सैनिको ने उनसे शीश छीन उसे गुरु तेग बहादुर जी का शीश समझकर दिल्ली लौट गए और गुरु जी का शीश बड़े आराम से आनंदपुर साहब में पहुँच, आदर सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

गढ़ी दहिया और बढ़खालसा का महत्व

यहाँ सब एक सूत्र में बंधे थे, अत्याचार के विरुद्ध सत्य के पक्ष में, गुरु नानक के घर से प्रेरणा पाते यह सब लोग गुरु की सखी की विसाल चादर के धागे थे, वही चादर जिस से गुरु तेग बहादुर जी ने सारी सृष्टि, सारी मानवता, सारे संसार को ढक लया था। इसीलिए कहा गया है – प्रगट भए गुरु तेग बहादूर, सगल सृष्टि पर ढापी चादर जहाँ दादा वीर कुशाल सिंह दहिया ने अपना बलिदान दिया था उसे "गढ़ी दहिया तथा गढ़ी कुशाली" भी कहते हैं। जब मुगल बादशाह को पता चला तब उन्होंने गढ़ी दहिया को तहस नहस कर आग लगा दी जो बाद में गढी के साहस व बलिदान से खालसा को आगे बड़ाने की वजह से बढ़खालसा के नाम से बसाई गई जो आज के समय में हरियाणा राज्य के सोनीपत जिले में स्थित है गुरबानी पुकारती है – "मन तू जोत सरूप है, अपना मूल पहचान।" यह पंक्ति केवल आध्यात्मिक उपदेश नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश भी है –

जब तक हम अपने भीतर की जोत को नहीं पहचानेंगे, तब तक दूसरों के अधिकारों के लिए नहीं खड़े हो पाएँगे। हमारे

भीतर की जोत अकाल पुरख से है, और वोह सारी मानवता, सारी सृष्टि में एक जैसी ही जल रही है। इस लिए गुरु नानक के घर में कोई पराया नहीं है, सब आपने ही हैं। यही मूल विचार है जिस से हम आत्मिक, राजनीतक और सामाजिक रूप में आगे बड़ सकते हैं। संसार और समाज के सामने उत्पन चुनौतियों का समाधान गुरबानी में है।

गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाएँ हमें तीन मुख्य मार्ग दिखाती हैं –

1. निर्भय बनो, अन्याय से मत डरो भय, शोषण की जड़ है। निर्भयता ही आध्यात्मिक शक्ति है।
2. दूसरों के अधिकारों की रक्षा स्वयं का धर्म समझो यही वास्तविक "मानवाधिकार संस्कृति" है।
3. त्याग को जीवन का उत्सव बनाओ जिस समाज में त्याग का आदर रहेगा, वहीं न्याय का सूरज उगेगा।

गुरु घर से शिक्षा प्राप्त गुरु तेग बहादुर जी से प्रेरित खुशहाल सिंह दहिया जी जैसे खालसा आंदोलन में अपने शौर्य और वीरता से बलिदान देकर, सिद्ध कर दिया खालसा स्मस्त सृष्टि के सरबत के भले के लिए मानवता के रक्षक के रूप में हमेशा मौजूद था, है, और रहेगा। इस तरह धर्म की खातिर बलिदान देने की भारतीय परम्परा में एक और अनोखी गाथा जुड़ गई। "गढ़ी दहिया" तथा "गढ़ी कुशाली" उस स्थान पर एक म्यूजियम है और वहां पर महाबलिदानी दादा कुशाल सिंह दहिया (कुशाली) की प्रतिमा को स्थापित किया है। यह स्थान सोनीपत जिले में बढ़खालसा नामक स्थान पर है सभी धर्मप्रेमियों को वहां दर्शन के लिए जाना चाहिए। बढ़–खालसा आंदोलन से संबंध कुशाल सिंह दहिया का बलिदान बढ़–खालसा आंदोलन से गहराई से जुड़ा हुआ माना जाता है। यह आंदोलन सिख समाज में धर्म, न्याय और समानता की रक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस आंदोलन का उद्देश्य न केवल धार्मिक स्वतंत्रता को संरक्षित करना था, बल्कि समाज में समानता और न्याय स्थापित करना भी था।

कुशाल सिंह दहिया ने अपने साहस और समर्पण से इस आंदोलन को मजबूती प्रदान की। उनके बलिदान से यह संदेश गया कि धर्म और न्याय के लिए किसी भी कीमत पर संघर्ष करना आवश्यक है। उनका योगदान खालसा पंथ की प्रतिष्ठा और सामाजिक चेतना को सशक्त बनाता है। इन संघर्षों में कई वीर और योद्धा थे जो खालसा पंथ के सिद्धांतों के अनुसार लड़े, और उनका योगदान सिखों के इतिहास में महत्वपूर्ण है महाराजा रणजीत सिंह के समय में जाट समुदाय और खासकर दहिया गोत्र के लोग सिख साम्राज्य के लिए महत्वपूर्ण योगदानकर्ता रहे थे, लोक स्मशति और मान्यता कुशाल सिंह दहिया की स्मृति आज भी हरियाणा और पंजाब में जीवित है। सोनीपत और आसपास के क्षेत्रों में उनके नाम पर स्मारक, प्रतिमा और शहादत दिवस मनाए जाते हैं। इसके अलावा, समाचार पत्रों, लोक इतिहास लेखों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों पर उनकी वीर गाथा दर्ज है। विभिन्न समारोहों और स्मृति कार्यक्रमों के माध्यम से उनकी वीरता और बलिदान को आम जनता तक पहुँचाया जाता है।

लोक इतिहास और दस्तावेज हालांकि कुशाल सिंह दहिया पर कोई विस्तृत अकादमिक पुस्तक उपलब्ध नहीं है, उनके योगदान को समाचार पत्रों, जाट इतिहास लेखों और लोक–कथाओं में दर्ज किया गया है। ये स्रोत उनके साहस, बलिदान और समाजिक प्रभाव को प्रमाणित करते हैं। उनकी कहानी दर्शाती है कि वीरता केवल ऐतिहासिक ग्रंथों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि लोक इतिहास और सामुदायिक स्मृति में भी जीवित रहती है। इस तरह की घटनाएं कभी–कभी गुरुद्वारों, स्थानीय समुदायों या आंचलिक लेखकों के माध्यम से संरक्षित होती हैं, लेकिन व्यापक इतिहास में उसका विवरण नहीं मिलता।

निष्कर्ष

कुशाल सिंह दहिया का जीवन और बलिदान हमें यह सिखाता है कि धर्म, न्याय और सामाजिक समानता की रक्षा के लिए किसी भी कीमत पर संघर्ष करना आवश्यक है। उनका साहस, समर्पण और वीरता हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

खालसा पंथ की स्थापनाः

गुरु गोविंद सिंह जी ने 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की थी। उनका उद्देश्य था एक ऐसा संगठित समूह बनाना, जो धार्मिक स्वतंत्रता, समाज की अच्छाई और न्याय की रक्षा करने के लिए तैयार हो। खालसा पंथ के सदस्य "सिंह" (पुरुष) और "कौर" (महिलाएं) उपनाम के साथ जानी जाती हैं। इस पंथ में शामिल होने के बाद व्यक्तियों को पांच ककारों (पाँच धार्मिक प्रतीकों) का पालन करना होता है, जैसे कड़ा, कंघा, कच्छा, कृपाण, और केस (बाल बढ़ाने की परंपरा)।

हरियाणा में जाट नसल में पूर्वजों के नाम में "सिंह" (पुरुष) और "कौर" (महिलाएं) उपनाम मौजूद है जो स्पष्ट दर्शाता है हरियाणा के जाट सिखी से ही संबंध रखते है। हमें यह संकल्प लेना होगा – गुरु तेग बहादुर जी की बाणी, उनका जीवन और उनकी शहादत हमें यही सिखाती है कि सच्चा धर्म वही है, जो अपने–पराये का फर्क भुला कर किसी भी शोषित वर्ग की स्वतंत्रता के लिए अपना सिर झुका दे, और सच्चा मानव वही है, जो अपने भीतर की जोत को पहचानकर संसार को प्रकाश दे।

वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह।

न जाट गजट अखबार रहा न जाट हाईस्कूल रोहतक रहेगा।

– सूरजभान दहिया, (मो० 9818120950)

चौ० छोटूराम ने कानूनकी शिक्षा पाने हेतु जून 1908 में 'लॉ–कालेज आगरा' में प्रवेश ले लिया। अपने रहन–सहन व पढ़ाई के खर्चे के लिये उन्होंने सेंट जान्स हाईस्कूल, आगरा में टीचर की नौकरी कर ली। जून, 1911 मे छोटूराम ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से प्रथम श्रेणी में कानून की परीक्षा पास की। उन दिनों 'लॉ–कालेज आगरा' इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संबंद्ध था। आगरा में रहते हुये छोटूराम परिचय यहां के रसूखदार जाट परिवारों से हो गया था, दूसरी तरफ, आगरा में जाटो की काफी आबादी थी। यह देखकर अगस्त 1911 में उन्होने आगरा में वकालत शुरू कर दी। उनकी प्रतिभा के कारण चौ० छोटूराम को वकालत आरंभ करते ही प्रसिद्धी मिलनी शुरू हो गई। चौधरी साहब को दो ऐसे मुकदमे मिले जिनमें उन्हें जीत मिली। इन्ही मुकदमो में की गई पैरवी के कारण वे सारे आगरा मंडल के नामी वकील हो गये। इस प्रकार एक वर्ष की अवधि में ही उन्होंने एक वकील के रूप में इतनी लोकप्रियता हासिल करली कि आगरा, मथुरा आदि जिलो मे जाट किसान उन्हें अपने समाज का हितैषी मानने लग गये तथा वकालत से उन्हें अच्छीखाशी रकम भी कमाई ।

अक्टूबर 1912 में चौ० छोटूराम ने आगरा छोड़ दिया और वे अपने गांव गढ़ी सापला आगये। दिल्ली से बस में आते सांपला उतरकर आप उन्होने बस एक अड्डे के पास अपना बख्शा व अन्य सामान एक हलवाई की दुकान पर रख दिया। वे फिर सीधे सांपला मंडी में लाला घासीराम की दूकान पर पहुंच गये। उनके पिता का देहान्त 1905 में हो गया था, तथा वे कुछ कर्जा लाला घासीराम का छोड़ गये थे। बाप का कर्जा बेटे को, फिर उसके बेटे को चुकाने का अभिशाप निरन्तर बना रहता था। चौ० छोटूराम ने लाला घासीराम को राम–राम किया और अपने बाप के कर्ज का हिसाब पूछा। लाला जी ने मुनीम से सुखीराम का बही मे पन्ना खोलने को कहा और आजतक देनदारी का हिसाब–किताब लाने को कहा। मुनीम ने पूरा हिसाब लगाकर सुरखीराम की देनदारी 3180 रुपये बताई और बही लालाजी के आगे रखदी। चौ० छोटूराम ने भी बहीपर नजर मारी। चौधरी साहब ने मुनीम से पूछा– "असली मूल कितना था और यह अंगूठे लगे के नीचे क्या लिखा है? मुनीम ने कहा 1400 रुपये मूल है और अंगूठे नीच लिखाः– "अगूठा खूद सुखीराम वल्द रामदास निवासी गढ़ी सापला।" यह सब कुछ मुन्डी भाषा यानी बनिया बही की लिखाई में लिखा था। चौधरी छोटूराम ने 3180 रुपये लाला जी को दे दिये और मुनिम से कहा – "बही के लेनदारी खत्म, हिसाब चुकता लिखो और लाला जी का भी अगूठा इसबही के पन्ने पर लगाकर लेनदारी पूरी की सनागत करवालो।" लालाजी ने चौ० छोटूराम बोले से कहा "आज तक तो ऐसा हमने नही किया।" फिर चौ० छोटूराम ने कहा तो, लालाजी रसीद लिखकर दो। लालाजी हक्के बक्के रह गये और बोले– छोटू। बैरस्टरी करली क्या, जो वसूली की रसीद मांग रहे हो? लाला जी, वहीतो करली है। लालाजी से रसीद लेकर चौ० छोटूराम बोले– लालाजी! याद है 1899 की बात, मेरे बाबू को मुझे पटवारी बनने की सलाह आपने दी थी और मैंने अपने को पटवारी बनाने वाला होने को कहा था, वह वक्त ज्यादा दूर नही और एक बात इसमे आज और जोड रहा हूँ–इस कर्जे की महाजनी पर भी लगाम लगेगी याद रखना। यह कहकर चौ० छोटूराम लाला घासीराम की दूकान से निकले।

चौ० छोटूराम हलवाई की दुकान पर आ गये। हलवाई की दूकान से चार सेर लड्डू और दो सेर पतासे चौ० छोटूराम ने खरीदें, अपना समान उठाया और तांगा करके अपने जन्मस्थान गढी सांपला पहुंचे।

गांव में सालिम तंगा करके और उनले पहनावे के बख्शे व समान सहित आना कुछ आश्चर्य जनक लोगों को लगता था। घर के पास तांगा रुका, चौ० छोटूराम उत्तरे – एक उल्लास का वातावरण उत्पन्त हो गया। सारे गाँव में हवा फैल गई चौ० छोटूराम वकालत करके आये हैं। सारे गॉव मे घर–घर लड्डु–पतासो का परोसा बटा–घर घर में खुशी थी। बैठक में लोग चौ० छोटूराम से मिलने आने लगे। यह सिलसिला देर साझ तक चलता रहा। छोटे काका रामसरूप थे जो अपने बड़े भाई सुरवीराम के साथ रहते थे। काका राजेराम का अपना अलग घर था। जब चौ० छोटूराम ने प्राईमरी स्कूल की शिक्षा पास कर ली थी तो उसके पिता सुखीराम ने आर्थिक तंगी के कारण छोटूराम को आगे पढ़ाने के लिये मना कर दिया था। फिर छोटूराम के काका राजेराम ने सुरखीराम को 100 रुपये देकर कहा – "छोटू को आगे पढ़ने के लिए झज्जर के मिडिल स्कूल में दाखिल करवाकर आओ – खर्चा–पानी मिलकर उठालेंगे।" यह सब चौ० छोटूराम के मन में धूम रहा था और इस सोच के साथ ने अपने काका राजेराम से देररात मिलने पहुंचे। उन्होंने काका राजेराम को अपनी बुकालत की पहली कमाई थमा दी। काका राजेरामने कहा – छोटू बेटे! घर में गुरब्बत है, मकान की जर्जर हालात है, पहले मकान बनाने की सोचो।" चौ० छोटूराम ने कहा "काका सब ठीक हो जायेगा। बेटा जब कमाकर पहली कमाई अपने बाप को देता है। बाप तो

है नहीं, अब तो आप ही मेरे बाप है – उसने कमाई को आपको सौंप कर अपने आपको धन्य समझूगा।

फिर चौ० छोटूराम ने काका राजेराम को बताया कि उन्होने लाला घासी राम का आज कर्जा उतार दिया है और कर्जा बहाली की रसीद काका को दे दी। उन्होंने आगे कहा– काका! मैं नही चाहता था कि अपनी जन्मस्थली पर मै एक कर्जवान के रुप में पैर रखू। यह सब सुनकर काका राजेराम के चेहरे पर रौनक उभरी और कहने लगे– "छोटू बेटे! मेरी अर्न्तआत्मा मुझे विश्वास दिलवा रही है कि तू घर का गाम का अर कौम का नाम जरूर रोशन करेगा" छोटूराम ने कहा– "काका बडा संघर्षशील जीवन रहा है अब तक का, आगे की जीवन भी संर्घषशील ही रहेगा पर न गुब्वत रहेगी और न कोई किल्लत। मेरा आगे का जीवन आप की सेवा हेतु समर्पित रहेगा। मैं कुछ समय समय अब आपके साथ बिताऊगा। अपनी जन्मभूमि से नेक कर्म करने का आर्शीवाद लेकर ही कही जाऊंगा।

चौ० छोटूराम गाँव में सभी से मिलते, खेत में जाते, किसान की दूर्दशा देखकर वे बहुत विचलित होते थे। कुछ दिनो में दिवाली आने वाली थी। किसानों का पर्व है लोगों में दीवाली मनाने का बड़ा चाव दिखता है। चौधरी छोटूराम ने इस त्यौहार को अपने गाँव में मनाने की बड़ी खुशी थी। दिवाली के दिन घर–घर में हलवा–खीर पकवान बने थे। घर–घर में सरसों के तेल के दीयो से प्रकाशमय थे। चौ० छोटूराम ने सभी घरों में खेल–खिलौने तथा खील भिजवाये तथा बच्चो को पटाके व फूलझडी बांटी। बच्चो के साथ मिलकर पटाके छुडाने का आनन्द भी लिया। गॉव में सभी के साथ दिवाली का त्यौहार मनाकर चौ० छोटूराम की बड़ी सन्तुष्टि का अनुभव हुआ।

उन्होंने पहले ही निश्चय कर रखा था कि रोहतक उनका कर्म क्षेत्र होगा। इसलिये गाँव से उनका रोहतक आना जाना लगा रहता था। दिवाली पर्व के पश्चात् उन्होंने सभी गाँव के बुजुर्गो से आशीर्वाद लेकर अपने मिशन को शुरू करने के लिये गाँव से रोहतक आ गये। जाते जाते सभी गांव वालो को कहा–"लंबी अंधेरी राते समाप्त हो रही है और हम सभी के जीवन की सुनहरी किरण चमकने का अवसर आ गया है। मैंने आपके साथ दिवाली को प्रकाशमय बनाया बस इसे आपणे जीवन की सुनहरी प्रभात समझों।

रोहतक में चौधरी लालचन्द भालोटिया ने जुलाई 1912 में वकालत आरम्भ की थी। इससे पूर्व 1909 में चौधरी नवल सिंह ने रोहतक में वकालत शुरू कर दी थी। उनके बाद चौ० रामचन्द्र ने दिल्ली से वकालत छोड़कर रोहतक में वकालत शुरू की थी। फरवरी 1913 में चौधरी छोटूराम ने भी चौधरी लालचन्द के साथ मिलकर वकालत शुरू कर दी। चौ० छोटूराम तथा चौ० लालचन्द झज्जर रोड, रोहतक पर एक ही मकान में किराये पर रहते थे। चौ० छोटूराम ने जब नीम तले अपनी वकालत शुरू की तो उन्होंने मुवक्किल तथा वकील के बीच जो सौहार्द संबंध बनाये उससे वे जिला बार कॉउसिल मे विवादित सदस्य बन गये । परन्तु उन्होंने मुवक्किल को सम्मान देने की जो परम्परा शुरु की, वह एक अद्वितीय पहल थी।

चौ० छोटूराम ने रोहतक में रहते वकालत के अतिरिक्त किसान उत्थान हेतु दो महत्वपूर्ण कार्य किये – एक तो उन्होंने जाट हाई स्कूल रोहतक की स्थापना मे प्रशंसनीय व सक्रिय सहयोग दिया, इस संस्था को बाद मे जाट कैम्ब्रीज की ख्याति भी प्राप्त हुई। आज यह संस्था बन्द होने के कगार पर है। जब महात्मा गांधी रोहतक आये थे, तो उन्होंने जाट हाई स्कूल को देखा तथा के अति प्रभावित हुये थे क्यो कि और कोई प्राईवेट हाईस्कूल यहां नही था और उन्होंने कटाक्ष किया था कि "वैश्यकौम इतनी सम्मपन्न होते हुई भी किसान समाज की दूरदर्शिता से पिछड़ी हुई है। जाट हाई स्कूल की स्थापना के 9 साल बाद 1922 में वैश्य हाई स्कूल बना था। मैं जाट हाई स्कूल रोहतक को जाट हैरीटेज का सम्मान देता हूं। अति खेद का विषय है कि जाट कौम इतनी जागरूक होते हुये भी इस हैरीटेज को लुप्त होते देख रही है। दूसरे शब्दों में यह कहा जाये कि हम चौ० छोटूराम की कृतिया के प्रति बिल्कुल संवेदनशील नहीं है।

दूसरी एक अद्भुत कृति चौ० छोटूराम की मीडिया क्षेत्र में थी। उन्होंने 1914 में रोहतक से साप्ताहिक अखबार "जाटगजट" का प्रकाशन शुरु किया। जिसक पहले संपादक पं० सुदर्शन नियुक्त किये गये तथा फिर दूसरे संपादक पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा बने जोकि प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता पं० श्रीराम शर्मा के पिता थे। इस अखबार ने देहात में सूचना प्रसारण क्षेत्र में क्रांति लाकर नव जागरण की अलौकिक भूमिका निभाई। थोडे ही दिनो मे "जाटगजट" पजाब के जाटो और जमीदारी की आवाज बन गया। चौधरी छोटूराम ने उसके द्वारा प्रत्येक अन्यायी को ललकारा चाहे वह हिन्दुस्तानी रहा हो, चाहे अंग्रेज।

वर्तमान में हम चौधरी छोटूराम के किसान योगदान को किस तरह देखते हैं। न तो हम "जाटगजट" का प्रकाशन जारी रखने में सफल रहे तथा न ही जाट हाई स्कूल को बन्द होने को संरक्षण देने में संवेदनशील हैं। आज जाटो को न तो कोई समाचार पत्र है और न ही कोई टीवी चैनल मीडिया तथा शिक्षण संस्थान ही किसी कौम के उत्थान के प्रमुख शस्त्र हैं और हमारी इस ओर कोई विशेष रूचि नहीं दिखाई देती। अब यह आपके आत्मथन का प्रश्न है कि आप चौ० छोटूराम के प्रति कितना समर्पण भावना रखते हैं?

कोशिश करिए थोड़ा तर्किक रहने की, भावुक ह्रदयों को अक्सर छल लिया जाता है।

हिन्दू राष्ट्रवाद की वैचारिक पृष्ठभूमि क्या रही है।

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार, (मो० 9991816826)

(क) राज्याश्रय का भी आर्थिक आधार था।

सांस्कृतिक राष्ट्रवादी ब्राह्मणों (मराठी) की दिव्य दृष्टि में केवल उनके द्वारा अनुकूलित (Conditioned) लांग ही उपयोगी है जोकि उनके वर्ण–विधान के मतानुसार क्षत्रिय योद्धा हैं। जिन मिश्रित रक्त–वंश के लोगों से शासक बनने पर अग्रहार ब्राह्मणों को कितने ही ग्रामदान अनुदान स्वरूप उपलब्ध हुए थे, भला वे उन राजपूत बर्बर परन्तु बीर योद्धाओं को ही सूर्य या चन्द्र के वीर वंशज क्यों नहीं बखानते। वैसे भी वे उनके सांस्कृतिक जो प्रतिमान थे, उनका भी तो प्राणपण से पालन करने वाले थे। भला नितान्त निरीह और निर्धन किसान उन्हें क्या देकर अपना गर्वगान करा सकते थे। तभी तो हमने अपनी "गोकुला गौरव" जैसी काव्य कृति में यही पंक्तियाँ रची थी–

जितना भी रहा प्रचारतन्त्र सामन्तवाद का अंग रहा,
तब जन–बल उसको क्यों भाता वह तो लगता बदरंग रहा,
वृत्ति मिलती सामन्तों से उसका तो ब्याज चुकाना था,
जो कृषक स्वयं ही भूखे थे उनका गुण काहे गाना था।

अतएव भूमि अनुदान भोगी परजीवी पुरोहितों ने सदा राजसत्ताओं की शक्ति का सहारा पाकर ही तो अपना जबकि किसान वर्ग राजनीति से या तो दूर वर्ग वर्चस्व धर्म और संस्कृति से लेकर राजनीति तक भी बनाये रखा है। रहा है या फिर वह सत्ता संस्थानों के विरुद्ध ही तो सतत संघर्ष करता रहा है।

(ख) कवियों और कलावन्तों की भूमिका क्या थी।

सामन्ती सन्नायक भी सदैव स्थापित सत्ताओं के प्रति सदा नमनशीला या फिर समझौतावादी ही रहे हैं। तभी तो हमने अपने "सुरजमल शौर्य गाथा" महाकाव्य में यही तो लिखा है–

जो राजवंश नामी ग्रामी,सब अब्दाली के थे हामी,
वे तदपि क्षत्रिय कुल के भूषण,समरथ को दोष नहीं स्वामी।

यहाँ पर यह ज्ञातव्य है कि जयपुर और जोधपुर के राजाओं ने ही आये दिन की मराठाओं की चौध (बलाद्) वसूली से आजिज आकर ही तो अहदमशाह अब्दाली को भारत में दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए बुलाया था और जाट शक्ति एवं मराठाओं की मरोड निकलवाने के लिए ही वे अब्दाली के मथुरा और पानीपत जैसे सैन्याभियानों के मूकदर्शक ही बनकर बैठे रहे थे।

राजपूत सामन्तों में भी जो भी अपनी प्रादेशिक स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत थे और संयोग से वह भी केन्द्र में बैठी मुस्लिम बादशाहत से भय नहीं था जितना धर्म राष्ट्रवादी लोगों के पूज्य पुरोधा वर्तमान काल में भयभीत हैं। फिर व चाहे राणा प्रताप सिंह रहे हों या फिर शिवाजी मराठा या बुन्देला छत्रयाल। उसमें भी अनिवार्य अनुबन्ध बस यही था कि यह किसी न किसी राजगुल से ही तो सम्बद्ध हों जोकि अपने यहाँ पर राजपुरोहितों और कवि–कलाकारों के रूप में विप्र देवों को सम्मानपूर्वक वृत्तिया और अनुदान (भूमि) भी दे सकें।

तभी तो भूषण नामक ब्राह्मण कवि ने छत्रसाल बुन्देला और शिवाजी मराठा की अपार दानशीलता को लक्ष्य करक यही कहा था– और राव राणा कोऊ मन में न लाऊँ नैक, शाहू को सराहूँ कै, सराहूँ छत्रसाल को।

(शिवा बावनी काव्यग्रंथ)

(ग) क्या हिन्दू सामन्त समझौतावादी नहीं थे।

क्या भारतीय हिन्दू सामन्त केवल अपनी धार्मिक स्वतंत्रता और राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए ही मुगलों के संग–साथ लड़ रहे थे। क्या उनके किंचित भी व्यक्तिगत और वर्गीय स्वार्थ नहीं थे। वरना शिवाजी मराठा–पुरन्दर के किले में जयसिंह मुगल सूबेदार की सेना से पूर्णतया पराजित होकर ही तो तब सुल्ह–समझौता करने को ही तो आगरा तक चलकर आये थे। यदि जयसिंह कछवाहे का पुत्र रामसिंह कछवाहा बजाय पाँच हजारी मनसबदारों के दस हजारी मनसवदारों की पॉक्त में ही ले जाकर उन्हें राजदरबार में खड़ा करा पाते, तभी उनका सुविधाजनक समझौता या सन्धि बादशाह ओरंगजेब के साथ सहजता संभव हो सकती थी।

परन्तु वहीं पर अपनी अगली पंक्ति (दस हजारी) में शिवाजी ने जैसे ही जोधपुर के राठौर राजा जसवन्त सिंह को खड़े हुए देखा था, बस तभी वे बादशाह को बजाय सलाम बजाने के अकडकर खड़े हो गये थे।

इसीलिए शाही दरबार में अभद्रता का उन्मुक्त प्रदर्शन करने के ही कारण शाही सैन्याधिकारियों ने नजरबन्द भी राजाज्ञा से बना लिया था। तभी वे येन केन प्रकारेण उत्कोच (घूस) देकर ही राज कर्मचारियों को दासता के उस बन्धन से मुक्त होकर स्वदेश (महाराष्ट्र) तक छद्म साधु के वेश–विन्यास में ही सपुत्र पहुँचे थे। यदि उस समय उनकी

सम्मानजनक सुलह–संधि औरंगजेब के साथ हो जाती तो क्या वे भूलकर भी कदाचित् तथाकथित उस स्वराज या हिन्दू–पद पादशाही के लिए तीन वर्षों बाद पुनः सत्ता–संघर्ष शुरू करते।

मानिये यदि शाही सेनापति राणा प्रताप सिंह को पूरे के पूरे राजपूताने या अजमेर सूबे का सूबेदार नियुक्त करवा देते और हो सकता है कि वे ऐसा ही कोई सम्मानजनक प्रस्ताव लेकर मेवाड में गये भी थे। यदि राणा प्रतापसिंह उसे स्वीकार कर लेते तो क्या वे अराष्ट्रीय और राष्ट्रद्रोही ही कहलाते। क्या राष्ट्रीय एकता में बाधा डालना ही धर्मयुद्ध होता है।

(घ) निरीह नारीसमाज की स्थिति भी दयनीय थी।

ब्राह्मणों और राजपूत सामन्तों में एक मिथ्या सांस्कृतिक गौरव और श्रेष्ठता का भी मिथ्या अंहकार गहराई तक भी समाया हुआ था। यथा, वे विधवा स्त्रियों का पुर्नविवाह नहीं रचाते थे, भले ही जीते जी ही उनका दारूण देह–दहन करके उनको सती भी बना देते थे। जबकि हमारी मध्य किसान जाति (सत्रशूद्र सछूत वर्ग) और श्रम–शिल्पी जो कामगार अतिशूद्र वर्ग की दबी–कुचली हुई जातियाँ थी। वे नारी समाज को भी पुनः विधवा–विवाह रचाकर मंगल गीत गाने का उन्मुक्त अवसर उपलब्ध कराया ही करती थी। गरज ये है कि ये राजपूत सामन्त स्वयं कितने ही बार विवाह रचाकर अपने महलों में नई–नवेली नारियों को अपनी यौन दासी जैसी कहने कहने भर को ही तो रानियाँ बना सकते थे।

जबकि शूद्र–श्रमिक एवं कृषक वर्ग की रमणियाँ अपने पतियों का पूरा प्रेम–प्रकर्ष पाती थी तो पुत्रों से भी उन्हें भरपूर सम्मान मिलता था। फिर कृषि जैसे श्रमप्रधान कर्मक्षेत्र में उन्हें श्रमदान करने का भी उन्मुक्त अबसर मिलता ही था, तभी तो वे शादी–ब्याह से लेकर खेत–खलिहानों और तो और पनघट तक भी पनिहारिन बनकर समवेत संगीत गाती हुई जाया करती थी। दूसरी ओर शतशः अपनी सपत्नियों या सौतों के मध्य में रानियों और महरानियां केवल सौतिया दाह में जलकर ही राख हुई रहती थी और उन अंधेरी काल कोठरियों में दिन–रात बन्द नितान्त एकान्त में ही अपना कालक्षेप किया करती थी।

तभी तो नरपति नाल्ह रचित बीसलदेव रासौ की नायिका रानी दुख–दग्ध होकर यही कहती है कि यदि वह राजरानी की बजाय कोई जाटनी या कृक्षक पत्नी होती तो उसे अपने प्राणप्रिय पति का स्नेह और पुत्रों से सम्मान भी सहज सुलभ होता। अतएव सामन्ती उसे शोषणकारी और दमनकारी व्यवस्था में स्वयं राजपरिवार की नारियों तक नाटकीय जीवन जीती थी। तब शेष श्रमिक समुदाय की स्थिति हम स्वयं ही समझ सकते हैं।

(ङ) संकीर्ण साम्प्रदायिक राजनाति ही क्यों हो।

सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों की दिव्य दृष्टि में साम्प्रदायिक दृष्टि सम्पन्न सामन्त हो राष्ट्रीय नायक मान्य है। उसके विपरीत जो सर्वधर्म सद्भाव समर्थन वीर गोकुलसिंह और राजा सूरजमल तथा नाहरसिंह और सरदार भगतसिंह जैसे धर्मनिरपेक्ष नायक उनके उस विषैले राष्ट्रवादी खांचे में कब फिट होते हैं। गोकुलसिंह ने जाटों के साथ ही तो गूजर और मेव–मुस्लिम जैसी मध्य किसान जातियों को लेकर ब्रज (मथुरा–वृन्दावन) में अपना संघर्ष मुगल फौजदारों के विरुद्ध चलाया था। उसी प्रकार से महाराज सूरजमल की सेना में भी जाट–गूजरों के साथ मीणे और मेव–मुसलमान भी शामिल थे। राजा नाहरसिंह तो अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर की ही कमान में विदेशी बिट्रिश कम्पनी सरकार के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम में सहभागी थे। और सरदार भगतसिंह का संघर्ष तो एक ही साथ राजनीतिक और आर्थिक उन्मुक्ति का भी था ही। तब भला ऐसे सर्वधर्म सद्भावी कृषक नायक हमारे हिन्दू धर्मी ध्वजाधारियों की विभाजनकारी और विषैली साम्प्रदायिक राजनीति में कब कहाँ समा सकते हैं।

उसके लिए तो केवल वर्णव्यवस्था को अंधविश्वासी राजपूत सामन्त और धर्मान्ध मराठा सरदार ही उनके कार्यसाधक हैं। फिर मराठी पेशवाई ब्राह्मण शासन–सत्ता का भी सुनहरी जो सपना है, वही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की आँखों में समाया हुआ है। तभी तो लोकोपकारी मुस्लिम बादशाहों और कल्याणकारी शासन सत्ता की स्थापना करने वाले विदेशी और विधर्मा अंग्रेज जो अधिकारी हैं, वे भी उनकी आँखों में आज खटकते हैं। तुमने लॉरेन्स रोड का नाम बदलकर दिल्ली में केशवपुरम तो रख दिया है परन्तु क्या एक भी नया कोई कार्य किया है।

औरंगजेब में हजार कमियाँ रही होंगी परन्तु वही सर्वाधिक राज्यक्षेत्र पर शासनाधिकार रखने वाला चक्रवर्ती सम्म्राट् था, जिसने तिब्बत और काबुल को भी जीतकर भारत–राष्ट्र का अंग बनाया था। वह आपकी भाँति साम्प्रदायिक भी सही परन्तु इतना घनघोर अंधा पक्षपाती और भ्रष्टाचारी तो नहीं था कि अपने मित्र नेताओं और सेठों को छू भी न सके।

(च) अब मूलभूत मानवीय समस्याएँ और नागरिक स्वतंत्राएँ विस्तृत हैं।

आजकल धर्मराष्ट्रवाद का नया और नंगा नारा देकर भारतीय समाज में एक ओर जहाँ पर साम्प्रदायिक वैमनस्य का

अहनिर्श और अनवरत व्यापक विस्तार किया जा रहा है। वहीं पर हमारी सारी की सारी संस्थागत स्वायत्तता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का भी तो विलोपन किया जा रहा है। आज कोई भी सरकारी संस्थान स्वतंत्र और तटस्थ नहीं है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की भी आजादी आजकल प्रतिबंधित नियम–विधान बनाकर सीमित की जा रही है। सामन्ती ही शासन सत्ता की ही भाँति दलित वर्ग और अल्पसंख्यकों को अब भला सामाजिक स्वतंत्रता समुपलब्ध कहाँ रह गई है। धर्म और जाति के नाम पर उनके साथ प्रत्येक क्षेत्र में भेदभाव पूर्ण व्यवहार क्यों किया जाता है। मुस्लिमों के साथ ही मॉब–लीचिंग प्रतिदिन क्यों की जाती है।

पुलवामा और पहलगाम में अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा सम्बन्धी असफलता है, उसका भी ठीकरा उन्हों कश्मीरी अल्पसंख्यकों के सिर फोडा जा रहा है। जिनके पूर्ण राज्य का दर्जा भी भाजपा की इस केन्द्रीय सरकार ने उनसे छीन लिया है और धारा 370 का अत्यन्त उन्मूलन करके उनकी सभ्यता और संस्कृति में बाहरी लोगों को उन्मुक्त हस्तक्षेप करने का अवसर दे दिया है। मनुस्मृति के उन्ही कालबाह्य धर्मादेशों को पुनः असवर्ण समाज के लोगों पर पुनः आरोपित किया जाएगा। सामन्ती शासन–विधान में स्मृतिशास्त्र ही संविधान की संहिताओं का कार्य किया करते थे। राजस्थान में भी सामन्त लोग किसानों को घोड़े की सवारी कहाँ करने दिया करते थे। आजकल भी दलित दुल्हों को घुड़सवारी कहाँ करने दी जा रही है।

बड़ी–बड़ी शिक्षण संस्थाओं का अनुदान समाप्त करके उन्हें भी निजी हाथों में सौंपकर नितान्त निर्धन छात्रों को शिक्षा से वंचित किया गया है। जो सेवा–सम्बन्धी सुधार और लाभ श्रमिक संगठनों से सुदीर्घ संघर्ष करके पाये थे– हडताल करने और वेतन वृद्धि जैसे। आजकल नवसाक्षर तकनीक के स्नातक भी आठ–दस हजार रुपयों में 12–12 घण्टे खट रहे हैं। हिन्दू राष्ट्रवादी धर्म–धुरन्धर भूलकर भी नागरिक अधिकारों की बहाली की आवाज क्यों उठायेंगें। आखिर वे स्वयं तो सर्वसाधन सम्पन्न उदरंभरि है हीं अतएव बढती हुई आर्थिक असमानता और बेरोजगारी या मंहगाई से भी द्विजातियों का क्या लेना–देना है। उन्हें तो बस हर हाल में हिन्दू राष्ट्र ही चाहिए। चाहे वह समाज और देश में भीषण घृणा फैलाकर और रक्त रंजित मारकाट करके भी चाहे वह क्यों न मिले।

62 Years of Bhakra Dam

- R.N.Malik, (Mob. 9911078502)

I visited the majestic Bhakra dam on 28th November for the 7th time. Visiting multipurpose storage dams has become a passion for me because I treat every such dam site as a Teerath Sathan or place of pilgrimage. This is because a multipurpose storage dam gives us five quintessential benefits namely valuable irrigation water, hydropower, ground water recharge, flood control and tourism. Consequently, I have, so far, visited number of big dams like Nagarjuna Sagar, Indranagar and Sardar Sarovar dams. But I have developed a special affinity for Bhakra dam firstly because it is the highest straight gravity concrete dam in the world with a height of 740 feet from the deepest foundation and 550 ft from the river bed. Secondly, the entire Bhakra dam complex has become a powerhouse for northern India. The aggregate power generation capacity of power plants at Slapper (990MW), Kol Dam (800MW, just two kms upstream), Bhakra Dam (1350 MW), Gangoowal, Kotla and Anandpur Sahib hydel project (284MW) comes to 3400 MW.

The irrigation benefits are equally stupendous. The project is able to irrigate 10 million acres of land in Panjab, Haryana and Rajasthan States. The record of flood moderation ensured by the dam is almost impeccable except in the year1988 when large amount of flow had to be spilled over. Devastating floods in Panjab this year were caused by the 16 downstream tributaries (between Nangal Dam and Ropar barrage) that added around 3.5 lac cusecs of flow to Satluj river. Only optimum flow was released from the the dam just to run the two power plants during that period.This is how the Bhakra project has become the lifeline for the people of Panjab, Haryana and Rajasthan States since 1963.

It is because of this beneficence that the late Prime Minister Sh. Jawaharlal Nehru paid glowing tributed to this

हीरा परखने से ज़्यादा, पीड़ा परखने वाला महत्वपूर्ण होता है।

project and its staff at the time of inauguration in October 1963 by saying **"It is something stupendous. It is something tremendous. It shakes you when you see it. Bhakra dam is the modern temple of Resurgent India"** The term **" Modern temple of Resurgent India"** has become synonymous for every multipurpose storage dam since then. In fact, Bhakra dam was the dream project of Nehru and he visited the project site 13 times during the construction phase.

Earlier Sir Chhotu Ram, then Revenue Minister in Panjab in 1923, was equally passionate about this project. The preparatory groundwork from conceptual stage to the final approval stage of the project was accomplished by him only.. It was an irony of fate that the final approval by then government Panjab was conveyed on 8th January 1945 just a day before his untimely death. Now, Bhakra Beas Management Board (BBMB) has decided to raise a statue of Sir Chhotu Ram at the dam site.

Fortunately, this year, the reservoir level of Gobindsagar has gone down only by 44 ft by end November and all power plants mentioned above were running at their rated capacity round the clock.The flow rate of 36000 cusecs was enough to irrigate the new wheat crop during the Kor period in the three States.

Inspite of these good attributes, the most disappointing feature of the complex is that the entire front surface of the dam has turned black due to the deposition of scum The BBMB colony with bewitching greenary also needs sprucing up the lawns and road sides. The residential buildings also cry for maintenance. The governments of Madhya Pradesh, Karnataka, Kerala and Gujrat have already gone ahead by converting their dam sites into tourist hot spots by adding features like botanical gardens, boating facilities, and musical fountains. The enchanting Statue of Unity complex at Sardar Sarovar dam in Gujrat has become the prime example in this respect. Alas! No such feature exists at any of the three majestic dams in Panjab. In fact, visits of tourists have become more cumbersome after handing over the security to the CSIF.

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (26.10.96) 29/5'2" MBBS, BPS from Govt. Medical College Sonepat. DNB medicine from MAMC Agroha. Doing SR ship at GMCH Sector 32 Chandigarh. Father late Ex-serviceman & retired Inspector from Haryana Roadways. Mother ANM in NHM. Preferred MD/MS/DNB or first class officer. Family settled at Kalka, Pinjore. Avoid Gotras: Narwal, Nain, Dhanda. Cont.: 9034240791*
- *SM4 Divorced Jat Girl (10.02.91) 34/5'2" MBA, HR management from GJU Hisar. B. Tech. (CSE) from K.U.K. affiliated University. Previously Senior HR in I.T. Company in Noida. Package Rs. 8 LPA. Father retired SR lecturer DIET Haryana government. Family settled at Bhiwani. Avoid Gotras: Kasania, Beniwal. Cont.: 9416921521*
- *SM4 Jat Girl (23.10.95) 30/5'7" CTET level. MA. Economics, M.Com from Punjab University. HTET Teacher in Smart school in Panchkula.. Avoid Gotras: Chahal, Natwadia, Sheshma. Cont.: 9888032883*
- *SM4 Jat Girl (24.08.99) 26/5'4" B.Sc. from PGIMER Chandigarh. Father in Irrigation department. Mother housewife. Avoid Gotras: Lamba, Rathi, Dhillon. Cont.: 8396919195*
- *SM4 Jat Girl (01.08.88) 37/5'3" BCA, MCA, B.Ed. Working as IB Educator in Heritage International School Gurugram. Six years experience with Edubridge International School Mumbai and Heritage International School Gurugram. Father retired from Government job, now engaged in Real Estate business at Gurugram. Mother housewife. Family settled at Gurugram. Avoid Gotras: Gandas, Sehrawat, Lochab. Cont.: 9868835193*
- *SM4 Jat Girl (10.06.95) 30/5'6" B. Sc. from Punjab University. M.Sc. Chemistry from Chandigarh University. B.Ed. Preparing for UPSC. Father ex-serviceman. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Dahiya, Sihag, Dhull. Cont.: 7837551914*
- *SM4 Jat Girl (28.09.98) 27/5'3" Bachelor of Engineering. Working as I.T. Software Developer in a reputed MNC (T.C.S.) at Indore. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Nandal. Cont.: 9303068646*
- *SM4 Jat Girl (06.10.2003) 22/5'5" B. A. Gotras: Dhull, Siwach, Redhu. Cont.: 8708626836*
- *SM4 Divorced Jat Girl (23.07.87) 38/5'3" M. A. English. B.Ed. Father retired Superintendent from Secretariat, Chandigarh. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Pahal, Dhankhar. Cont.: 9496274217, 9888496336*
- *SM4 Jat Girl (18.01.95) 30/5'3" B.DS. from Government Dental College Mumbai. Profession Dentist. (Own clinic). Father retired from Indian Navy. Mother housewife. Family settled at Sukhna Enclave, Mohali. Avoid Gotras: Sangwan, Punia, Legha. Cont.: 8826398004.*
- *SM4 Jat Girl (Nov. 97) 27/5'3" M.Sc. Chemistry from Punjab University. Environment Management & Assessment Georgian College Canada. Working as Analytical Chemist at a Private Company in Toronto. Father ASI in Delhi police. Mother housewife. Avoid Gotras: Nandal, Rathi, Ghanghas, Khatri, Bajad. Cont.: 9050050072*
- *SM4 Jat Girl (11.08.99)26/5'7" B.Com. (Hons.) Christ University Banglore. Employed in BAIN & Company Gurugram. Salary 27 lakh per annum. Father Senior Manager in MNC at Banglore. Mother Teacher (HOD-Hindi) at Banglore. Brother B. Tech, Developer in MNC at Banglore. Preference: IIT/NIT/Engineering Graduate/MBA/CA/Job in MNC. Avoid Gotras: Goyat, Saharan, Grewal. Cont.: 8168294936*
- *SM4 Jat Girl (28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl (31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Selected as Assistant Professor in Government college through HPSC, joining awaited. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb,*

अगर तुम्हारी नियत सही है, तो गलत रास्ते भी तुम्हें सही मंजिल तक पहुँचा देते हैं।

Rana. Cont.: 9812238950

- SM4 Jat Girl (01.09.96) 29/5'3" M. Com. from Punjab University Chandigarh. UGC, NET Commerce qualified. Father's Jewelery business. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Dagar, Dhull. Cont.: 9896290431
- SM4 Jat Girl (10.06.1995) 29/5'6" B.Sc from PU Chd and M.Sc Chemistry from Chandigarh University, and B.Ed preparing for UPSC, family living at Rohtak, father ex man and mother H.wife, Avoid Gotra: Dahiya,Suhag, Dalal. Cont.: 7837551914.
- SM4 Jat Girl (01/10/1993) 32/5'2" MA(English)from PU, JBT from haryana, B.Ed from PU, CTET- jbt (thrice),CTET-tgt HTET-jbt(4 times), HTET-pgt(twice) RajasthanTET-jbt(twice), Punjab TET-jbt and tgt, working as government primary teacher in punjab, Avoid Gotra: Sangwan, Phogat, Pilania. Cont.: 9416869289.
- SM4 Jat Boy (03.07.1995) 30/ 5, 8" B.Tech (Electrical), Diploma in Mechanical(2yr) Job Lab Technician, autoliv, Japanese salary 5 lacs PA. Avoid Gotta: Nandal, Deswal, Malik cont.: 9034928000
- SM4 Jat Girl (31.08.1999) 26/5'3" B.ed. CTET level 1,2 Qualified (kurukshetra University)M.A. (English) (Kurukshetra University). Father's Jewelery business. Mother housewife. father retired J.E. (UHBVN) Family living in kurukshetra... sector 3 HUDA, Kurukshetra Haryana, Avoid Gotras: Dhariwal, Sangwan, Malik. Cont.: 9315343029
- SM4 Jat Boy (23/01/1998) 28/5'9" B.Tech.(KUK), M.Tech. (Electrical)UIET Campus, KUK, Master of science in engineering from USA, working as instructor in Arkansas State University USA, father retired J.E. (UHBVN) Family living in kurukshetra... sector 3 HUDA, Kurukshetra Haryana, Avoid Gotras: Dhariwal, Sangwan, Malik. Cont.: 9315343029
- SM4 Jat Boy (16.04.1998) 27/5'8" B.Com. Employed in Judicial Department, Tarn Taran as clerk. Father retired from HSVP, Mother Housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Mahlawat, Joon. Cont.: 98772 97632
- SM4 Jat Boy (25.08.96) 29/5'9" B. Tech, MA. Employed as officer in Government bank. Preparing for civil services. Father retired Sub-Inspector from Haryana Roadways. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Bamel, Narwal, Punia. Cont.: 9467645319, 7696322587
- SM4 divorced Jat Boy (27.10.93) 32/5'9" Post graduate (MBA). Employed as Sub-Inspector in Punjab Police. Posted as Chowki In-charge at Lahli (Mohali). Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Barak, Lathar, Narwal. Cont.: 9779666000, 8054575757
- SM4 Jat Boy (03.10.94) 31/5'11" B. Tech. Working as Software Engineer. Income Rs. 18 LPA. Father professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik Cont.: 9463742136
- SM4 Jat Boy (11.04.99) 26/6'1" B.Tech. (Mechanical). M.Sc. Management from U.K. London. Presently working in U. K. Father's on business in Bhiwani and other Districts of Haryana. Mother housewife. Family settled at Bhiwani. Preferred match of height 5'5" and above having highly qualified. Avoid Gotras: Sangwan, Bhambu, Jaglan. Cont.: 9813247771
- SM4 Jat Boy (12.09.97) 28/5'7" B. Tech (CSE) from LPU Jalandhar. Working in I.T. Sector Hyderabad. Salary Rs. 27.30. LPA. Father Assistant Director in Khadi & Village Industry Commission at Ambala Cantt. Mother housewife. Own house in Zirakpur (Punjab). Two acre agriculture land. Avoid Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Cont.: 8360153519.
- SM4 Jat Boy (21.08.95) 30/5'9" B. Tech in Mechanical Engineering. Working as S.R. Associate Digital Marketing in a reputed MNC at Pune. Salary Rs. 8.5 LPA. Freelancing Business. Father retired from PGIMER Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045.
- SM4 Divorced Jat Boy (25.02.91) 34/6 feet. Graduate from Punjab University. Own business (bookshop in Chandigarh). Own shop and own house in Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (18.04.99) 26/6 feet. B. A. One year Computer Diploma from IIT Rohtak. One year Diploma in Computer from HATRON Rohtak. Father's occupation: Business. Three acre agriculture land in village. Double storey residence in Rohtak and three flats in Gurugram etc. Rental income Rs. 75000/- per month. No dowry and minimum Baraat in marriage. Cont.: 9896494202
- SM4 Jat Boy (18.01.95) 30/5'9". B. Tech. ECE. Self employed. Income Rs. 18 LPA. Father Under Secretary retired from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Nayagaon (Punjab). Two acre agriculture land. Avoid Gotras: Dhariwal, Rathi, Grewal. Cont.: 9888083645, 9915658166
- SM4 Jat Boy (21.08.97) 28/6ft. B. Tech. in Mechanical Engineering from MDU Rohtak. PG in Supply Chain Management Northern College Toronto. Working at Fastenal Canada in Supply Chain. Father retired Inspector from Haryana Police. Avoid Gotras: Tomar, Sindhu, Dhalan. Cont.: 9996611677, 9996634677
- SM4 Jat Boy (July 97) 28/5'11" B. Tech. from IIT. Employed as Inspector in GST & Custom. Father Assistant Manager in Bank, Air Force veteran. Residential house in Kurukshetra. Avoid Gotras: Ola, Goyat, Sheoran. Cont.: 9802076149
- SM4 Jat Boy (September 94) 31/ 5'9" Government job in Post office Panchkula. Avoid Gotras: Dhayal, Poonia, Phogat. Cont.: 9416270513, 9996611722 .
- SM4 Jat Boy (May 1999) 26/5'7" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed as Software Engineer in reputed company at Banglore with package of Rs. 60 lakh per year. Father in Government job at Chandigarh. Mother housewife. Younger brother pursuing B. Tech. Avoid Gotras: Seniwal, Budania, Jhajhra. Cont.: 9417317416
- SM4 Jat Boy (07.06.91) 33/5'6" B. Tech (IT). M. Tech, Cyber Security Macquarie University Sydney, Australia. Working as Network Engineer at HSC Gurugram (work from home). Has Canada Ontario PR-willing to move to Canada. Income 60000-PM. Family income Rs. 30-35 LPA. Father Advocate & notary. Mother PGT, Haryana Government school. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Pannu, Phor, Malik. Cont.: 9888727222
- SM4 Jat Boy (20.10.92) 32/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Haryana government. Mother in private job. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (09.09.97) 27/ 6feet. B. Tech (Computer Science). M.B.A. employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 22.5 LPA (work from home). Father retired Supervisor form HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house in Pinjore. Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (10.12.95) 30/5'10" B.Tech. Self employed in Chandigarh. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Lochab, Hooda, Dhankar. Cont.: 8146991568

जाट सभा के प्रयास से भाखड़ा नंगल डैम पर चौ० छोटूराम की प्रतिमा लगाई जायेगी।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मु द्वारा उक्त सभाओं के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ० एम.एस. मलिक, आईपीएस (सेवानिवृत) के प्रयासों व अगुवाई में काफी समय से आजादी के पूर्व के किसान मसीहा दीनबंधु चौ० छोटूराम की प्रतिमा भाखड़ा नंगल डैम व म्यूजिम में लगाई जाने के लिये प्रयास किये जा रहे थे। दीनबंधु चौ० छोटूराम का पेयजल व सिंचाई के महत्वपूर्ण प्रौजेक्ट भाखड़ा नंगल डैम को पारित करवाकर स्थापित करवाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस संबंध में सचिव, भाखड़ा ब्यास प्रबंध बोर्ड, चण्डीगढ़ द्वारा मुख्य अभियंता, भाखड़ा बांध नंगल को पत्र लिखकर शीघ्र आवश्यक कार्यवाही करते हुये भाखड़ा नंगल म्यूजियम पर दीनबंधु चौ० छोटूराम की प्रतिमा स्थापित करने के निर्देश दिये जा चुके है।

जाट सभा द्वारा भाखड़ा नंगल डैम पर दीनबंधु चौ० छोटूराम की प्रतिमा स्थापित करवाने के लिये माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, भारत के राष्ट्रपति महोदय, हरियाणा प्रदेश के सभी सांसदो, केन्द्रिय मंत्रियों व हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल आदि से प्रस्ताव भेजकर अनुरोध किया गया था। पूर्व केन्द्रिय मंत्री स्व० श्री रतन लाल कटारिया का भी इस महत्वपूर्ण कार्य में सराहनीय प्रयास रहा है जिन्होंने चौ० छोटूराम की प्रतिमा नंगल डैम पर लगाने के लिये ससंद के सत्र में पुरजोर मांग उठाई थी। अतः जाट सभा द्वारा आगामी 23 जनवरी 2026 को चौ० छोटूराम के जन्म दिन पर मनाये जा रहे उत्सव में स्व० कटारिया जी की धर्मपत्नी श्रीमती बन्तो कटारियां, राज्य उपप्रधान भाजपा को अतिथि के तौर पर सम्मानित किया जायेगा। इसी प्रकार पूर्व केन्द्रिय मंत्री चौ० बीरेन्द्र सिंह ने भी अपने कार्यकाल के दौरान एवं व्यक्तिगत तौर से भाखड़ा नंगल डैम पर दीनबंधु चौ० छोटूराम की प्रतिमा लगवाने के लिये लगातार काफी सराहनीय प्रयास किये। अतः जाट सभा द्वारा उनको बंसत पंचमी समारोह पर विशेषतौर से सम्मानित किया जायेगा।

कहाँ गए वो दिन

– रामचन्द्र पन्नू (मो० 9467743048)

कहां गए वो बचपन के दिन, बचपन की किलकारियां कहां गए,
वो मातपिता और उनका दुलार कहां कहां?
कहां गई वो काकी, ताई, भाभी, नंनद की पनहारियां?
कहां गए बचपन के झूले, उन्हें झूलावनहारियां?
कहां गए वो रथ मझोली और उनके रथवान कहां।
हाय! कुछ कालगर्त में, चले गए कुछ की जाने की तैयारियां
कहां गए वो बचपन...........
कहां गए वो चिड़ी पपीहे, गिद्ध, चील और मोर कहां?
कहां गए वो बुलबुल, कोयल, तोते का वह शौर कहां ?
गहां गया जोहड़, कुओं का पानी उनकी ताजी सोर कहां?
कहां गए कीड़े–मकौड़े, केंचुए, गिजाई और उनकी कतार कहां?
कुछ समय का हुआ तकाजा बहुत कुछ प्रदुषण की हानियां
कहां गए वो बचपन के दिन..........................
कहां गए वो भजन, सांग और सारंगी की तान कहां ?
कहां गए वो आल्हा उद्धल हरफूल जुलानी जाट कहां?
कहां गए चौ० चरण सिंह, देवीलाल और सर छोटूराम कहां ?
कहां गए भरतपुर का किला और गोहद वाला राज कहां?
कहां गए त्याता टोपे, सुभाष, भगत सिंह, बिस्मिल की आवाज कहां ?
सब अपनी करनी कर चले, हमारी इतिहास सम्भालने की जिम्मेवारियां?
कहां गए वो पुराने दिन और बचपन की किलकारियां ?

हमें जिन पर गर्व है।

महानिदेशक कार्यालय भारतीय तिब्बत सीमा बल दिल्ली द्वारा पॉश ट्रेनर तथा मोटिवेशनल स्पीकर प्रियंका पुनिया को प्राथमिक प्रशिक्षण केन्द्र, भानू, पंचकुला (हरियाणा) की महिला कर्मिकायों के यौन उत्पीड़न संबंधित मामलों के लिए कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न निवारण प्रतिषेध आंतरिक शिकायत समिति में सहयोजित सदस्य नियुक्त किया गया।

जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त सदस्यगण तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और उनके व समस्त परिवार के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

लोग आपसे नहीं, आपकी स्थिति से हाथ मिलाते है।

हमें जिन पर गर्व है

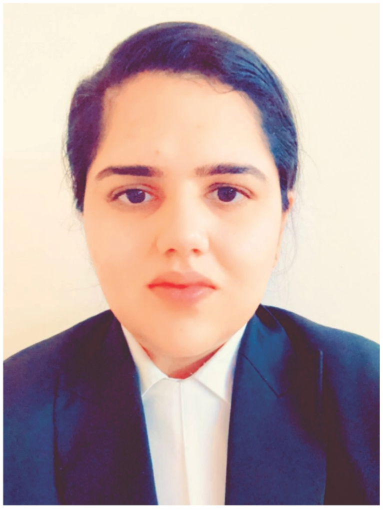

We are proud to share that Sonia Sehrawat, daughter of Mr. Subhash Sehrawat (Life member of Jat Sabha Chd./Pkl and Katra), has been officially appointed as an Additional Central Government Standing Counsel (CGSC) for the Central Administrative Tribunal, Principal Bench, New Delhi, as per the order issued by the Ministry of Law & Justice, Department of Legal Affairs.

A graduate of the esteemed Faculty of Law, University of Delhi (Campus Law Center), Sonia brings strong academic grounding and diverse litigation experience to her new role. She will now represent the Government of India in tribunal matters - an important achievement that highlights her dedication, legal acumen, and rising leadership in the field of law.

Her impanelment reflects both her professional excellence and the confidence placed in her by the Government of India. This milestone marks a significant advancement in her legal career and stands as an inspiration for young professionals in the legal fraternity.

Ms. Ashu Choudhary, daughter of Ch. Hari Singh Malhan, has been an exceptionally promising student since the very beginning of her academic journey. She consistently topped her classes throughout her school years. Pursuing Mathematics Honours at Punjab University, she secured the first position in the university.

In 1994, she joined the Chandigarh College of Architecture, where once again she achieved the top rank in Panjab University. Her name remains proudly inscribed on the Roll of Honour of the College of Architecture, Chandigarh.

She later completed her M.Tech in Urban Planning from Guru Nanak Dev University. securing the top position there as well. Another remarkable achievement was clearing the HPSC examinations three consecutive times, though she chose not to join.

In 2006, she successfully cleared the UPSC examination and was selected to join the CPWD, where she has been serving with distinction ever since.

Her pursuit of excellence did not stop there. She enrolled at SPA Delhi to pursue a Ph.D. in Master Plan Implementation Process and successfully completed the degree.

What makes her journey truly inspiring is that, despite limited resources, she persevered and continued to excel. Ms. Ashu Choudhary's extraordinary dedication and determination deserve the highest admiration.

Her story is a beacon of inspiration for the younger generation, reminding us that hard work, resilience, and commitment can overcome any obstacle.

उपरोक्त सभी की उम्मदा उपलब्धि पर जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ0 छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त कार्यकारिणी तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और इनके व समस्त परिवारों के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा० राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417

श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870,M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।